Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding I

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

16.3.81

भजन संग्रह

भाग २

संग्रहकर्ता—

श्रीवियोगी हरिजी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

मुद्रक तथा प्रकाशक—मोतीलाल जालान, गीताप्रेस, गोरखपुर
Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

[भारत-सरकारद्वारा उपलब्ध कराये गये रियायती मूल्यके कागजपर मुद्रित]

सं०	१९८७ से २०२८	तक	३,२५,०००
सं०	२०३१	पचीसवाँ संस्करण	२५,०००
सं०	२०३५	छब्बीसवाँ संस्करण	५०,०००
		कुल	४,००,०००
			चार लाख

मूल्य पंद्रह पैसे

पता—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

श्रीहरिः

वक्तव्य

भजन-संग्रहके इस दूसरे भागको हमने दो विभागोंमें वि कर दिया है। पहले विभागमें व्रजके महात्माओंकी वाि और दूसरेमें आत्मानुभवी प्रेमी संतोंके अनुभवके रंगमें कुछ शब्द संग्रहीत किये गये हैं।

पहे भागमें श्रीकृष्ण-प्रेमार्णवमें निमग्न महापुरुषोंके रसभरे भ हैं। महात्मा सूरदासजीके पद पहले भागमें आ चुके हैंक्योंकि तुलसी और कबीरसे हम उन्हें पृथक् नहीं कर े। इस निकुञ्जमें अष्टछापके अन्य अनन्य भक्तों तथा हितहरिवंश, स्वामी हरिदास, गदाधर भट्ट, हरिराम व्यासआदि व्रज-रस-मधुकरोंकी सुललित गुंजार हम सुनते हैं। इन सब महात्माओंने नन्दनन्दन कृष्णचन्द्रकी मधुर लीलाओंका प्रत्यक्ष अनुभव किया था इसमें संदेह नहीं अपने अनुभवोंको इन्होंने अनुपम पदोंसे अङ्कित किया है। पढ़ और सुनकर हमारा मलिन हृदय कृष्ण-रसमें उन्मत्त होकर मयूरवत् नृत्य करने लगता है। व्रज-बानीमें वह सामर्थ्य है कि स्वयं

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

व्रजराजकुमारको हमारे हृदय-आँगनमें मानो किलक-किलककर बालकेलि कराने लगती है। तब फिर किस अभागेका मन मचलकर व्रजमण्डलके इन भक्त-महात्माओं-के पदोंकी ओर आकर्षित न होगा ?

दूसरे विभागमें नानक, दादूदयाल, रैदास, मलूकदास आदि संतोंके पदोंका संक्षिप्त संग्रह है। संतशिरोमणि कबीर पहले भागमें आ चुके हैं। सूर और तुलसीका संग हम उन्हें कैसे छुड़ाते ! वास्तवमें ये शब्द सद्गुरुके प्रेम-बाण हैं। इनसे जो घायल हुआ, वह कृतकृत्य हो गया। वैराग्य और अनुरागकी झाँकी जैसी इन संत-बानियोंमें मिलती है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ है।

क्या कभी ऐसा दिन आयगा, जब हम सब इन पुनीत पदोंके प्रेम-रसमें डूब जायँगे, लगनके इन शब्द-बाणोंसे घायल हो जायँगे, भगवान् शीघ्र वह दिन लावें, यही हमारी कामना है।

मोहन-निवास,
पन्ना

वियोगी हरि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

श्रीहरिः

अकारादि-क्रमसे विषय-सूची

[पहला खण्ड]

हितहरिवंश

भजन	पृष्ठ
तातें भैया, मेरी सौं कृष्ण गुन संचु ...	१७
प्रीति न काहु कि कानि बिचारै ...	१९
मोहन लालके रँग राची ...	१८
यह जु एक मन बहुत ठौर करि ...	१७
रहौ कोउ काहू मनहि दियें ...	१८
स्वामी हरिदास	
काहूको बस नाहिं तुम्हारी कृपा तें ...	२०
गहौ मन सब रसको रस सार ...	२३
जौ लौं जीवै तौ लौं हरि भजु रे मन ...	२२
ज्योंहीं ज्योंहीं तुम राखत हौ ...	१९
तिनका बयारिके बस ...	२१
प्रेमसमुद्र रूपरस गहिरे, कैसे लागै घाट ...	२२
मन लगाइ प्रीति कीजै कर करवा सों ...	२१
हरिके नामको आलस क्यों ...	२१
हरिको ऐसोइ सब खेल ...	२२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

c Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

भजन ... पृष्ठ
हित तौ कीजै कमलनैनसों ... २०

गदाधर भट्ट

आजु ब्रजराजको कुँवर बनते बन्यो ... ३०
कबै हरि, कृपा करिहौ सुरति मेरी ... २७
जयति श्रीराधिके सकलसुखसाधिके ... २७
जय महाराज ब्रजराज-कुल-तिलक ... २८
झूलत नागरि नागर लाल ... २९
दिन दूलह मेरो कुँअर कन्हैया ... २४
नमो नमो जय श्रीगोविंद ... २५
श्रीगोविंद पद पल्लव सिर पर बिराजमान ... २४
सखी, हौं स्याम रंग रँगी ... २३
सुन्दर स्याम सुजानसिरोमनि ... ३०
हरि हरि हरि हरि रट रसना मम ... २६
है हरितें हरिनाम बड़ेरो ... २६

नन्ददास

जो गिरि रुचै तौ बसौ श्रीगोवर्धन ... ३५
रामकृष्ण कहिये उठि भोर ... ३८

कुम्भनदास

जो पै चोप मिलनकी होय ... ३६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

भजन	पृष्ठ
नैन भरि देख्यौ नंदकुमार	··· ३६
भगतकौं कहा सीकरी काम	··· ३५
हिलगिन कठिन है या मनकी	··· ३६

परमानन्ददास

कौन रसिक है इन बातनकौ	··· ३७
जसौदा तेरे भागकी कही न जाय	··· ३८
जियकी साधन जिय ही रही री	··· ३८
ब्रजके बिरही लोग बिचारे	··· ३७
मेरौ माई माधो सों मन लाग्यौ	··· ३९

कृष्णदास

जबतें स्याम सरन हौं पायौ	··· ३९
बाल दसा गोपालकी सब काहू प्यारी	··· ४०
मो मन गिरिधरछबिपै अटक्यौ	··· ४०

व्यासजी

ऐसे ही बसिये ब्रजबीथिन	··· ४४
कहा कहा नहिं सहत सरीर	··· ६५
कहत सुनत बहुतै दिन बीते	··· ५०
जैये कौनके अब द्वार	··· ४५
जो दुख होत बिमुख घर आये	··· ४७

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

c Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

भजन	पृष्ठ
जो सुख होत भगत घर आये	... ४९
धरम दुरयो कलिराज दिखाई	... ४६
नव चक्र चूड़ा नृपति मन साँवरौ	... ४२
परमधन राधे नाम अधार	... ५०
वृन्दाबनकी सोभा देखे मेरे नैन सिरात	... ४१
भजौ सुत, साँचे स्याम पिताहि	... ४६
रसिक अनन्य हमारी जाति	... ४३
राधा-वल्लभ मेरौ प्यारौ	... ४१
साधन बैरागी जड़ बंग	... ४७
सुने न देखे भगत भिखारी	... ४८
हरिदासनके निकट न आवत	... ४३
हरि बिनु को अपनौ संसार	... ४९
श्रीभट्ट	
जुगुलकिसोर हमारे ठाकुर	... ५२
बलि बलि श्रीराधे नँदनँदना	... ५३
बसौ मेरे नैननिमें दोउ चंद	... ५३
ब्रजभूमि मोहिनी मैं जानी	... ५१
मदनगुपाल, सरन तेरी आयौ	... ५१
राधे, तेरे प्रेमकी कापै कहि आवै	... ५३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

भजन	पृष्ठ
सेव्य हमारे हैं पिय प्यारे	... ५२
स्यामा स्याम पद पावैं सोई	... ५२

सूरदास मदनमोहन

चलौ री, मुरली सुनिये, कान्ह	... ५६
नंदजू मेरे मन आनंद भयो, हौं	... ५४
प्रगट भई सोभा त्रिभुवनकी	... ५५
मधुके मतवारे स्याम, खोलौ प्यारे पलकैं	... ५६
मेरे गति तुमहीं अनेक तोष पाऊँ	... ५५

नागरीदास

किते दिन बिन बृंदाबन खोये	... ६०
चरचा करी कैसे जाय	... ५७
जो मेरै तन होते दोय	... ५८
दरपन देखत देखत नाहीं	... ५९
दुहुँ भाँतिनकौ मैं फल पायौ	... ५९
ब्रजबासीतें हरिकी सोभा	... ६१
ब्रज सम और कोउ नहिं धाम	... ६२
भगति बिन हैं सब लोग निखट्टू	... ६०
हमारै मुरलीवारौ स्याम	... ५७
हरि जू अजुगत जुगत करेंगे	... ५९
हमारी सब ही बात सुधारी	... ६०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

c Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

भजन पृष्ठ

भगवतरसिक

इतने गुन जामें सो संत ... ६५
जय जय रसिक रवनीरवन ... ६६
नमो नमो बृंदावनचंद ... ६६
परस्पर दोउ चकोर दोउ चंदा ... ६३
बेषधारी हरिके उर सालैं ... ६४
लखी जिन लालकी मुसक्यान ... ६३

नारायण स्वामी

करु मन, नंदनँदनको ध्यान ... ६९
चाहै तू योग करि भृकुटीमध्य ध्यान धरि ... ७२
जाहि लगन लगी घनस्यामकी ... ६७
टेर सुनो व्रजराज दुलारे ... ७५
देख सखी नव छैल छबीलौ ... ७१
नयनों रे, चित चोर बतावौ ... ७२
नंदनँदनके ऐसे नैन ... ७०
प्रीतम तू मोहिं प्रान ते प्यारौ ... ६९
बेदरदी, तोहि दरद न आवै ... ७१
मनमोहन जाकी दृष्टि परत ... ६८
मूरख, छाँड़ि बृथा अभिमान ... ७४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

भजन	पृष्ठ
मोहन बसि गयो मेरे मनमें ...	६८
मोपै कैसी यह मोहिनी डारी ...	७१
या साँवरेसों मैं प्रीति लगाई ..	७०
रूपरसिक, मोहन, मनोज-मन-हरन ...	७३
सखि, मेरे मनकी को जानै ...	५७
स्याम दृगनकी चोट बुरी री ...	६०

ललितकिशोरी

अब का सोवै सखि ! जाग जाग ...	७७
अब तौ तेरिय हाथ बिकानी ...	८४
अब कुलकानि तजेही बनैगी ...	८६
कमलमुख खोलौ आजु पियारे ...	८५
दुनियाके परपंचोंमें हम मजा नहीं कुछ पायाजी ...	८१
नैन चकोर, मुखचंदहूकों बारि डारौं ...	८३
मन, पछितैहौ भजन बिनु कीने ...	७६
मुसाफिर, रैन रही थोरी ...	७७
मुरकि मुरकि चितवनि चित चोरै ...	८२
मैं तुव पदतर रेनु रसीली ...	८४
मोहनके अति नैन नुकीले ...	७९
रे निरमोही, छबि दरसाय जा ...	८०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

c Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

भजन पृष्ठ

लटक लटक मनमोहन आवनि ... ७७
लजीले, सकुचीले, सरसीले, सुरमीलेसे ... ८०
लाभ कहा कंचन तन पाये ... ७९
साधो, ऐसिइ आयु सिरानी ... ७८

[दूसरा खण्ड]

दादूदयाल

अरे मेरा अमर उपावणहार रे ... ९३
अहो नर नीका है हरिनाम ... ९७
आव पियारे मीत हमारे ... ९२
इत है नीर नहावन जोग ... ९१
ऐसा राम हमारे आवै ... ८८
कबहूँ ऐसा बिरह उपावै रे ... ९६
कोइ जानै रे मरम माधइया केरौ ... ९४
क्यों बिसरै मेरा पीय पियारा ... ९५
जगसूँ कहा हमारा ... ९२
जागि रे सब रैण बिहाणी ... ९७
तब हम एक भये रे भाई ... ९०
तूहीं मेरे रसना तूहीं मेरे बैना ... ९९
तू साँचा साहिब मेरा ... १०१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

भजन	पृष्ठ
तौलगि जिनि मारै तू मोहिं	... ८७
नूर रह्या भरपूर, अमीरस पीजिये	...१०१
पंडित राम मिलै सो कीजै	... ९८
बटाऊ रे चलना आज कि काल	... ९४
बाबा नाहीं दूजा कोई	... ९९
बिरहणिकौं सिंगार न भावै	... ८७
मन मूरिखा तैं यौंहीं जनम गँवायौ	...१००
मेरे मन मैया राम कहौ रे	... ८६
मेरा मेरा छोड़ गँवारा	... ९१
राम रस मीठा रे, कोई पीवै साधु सुजाण	... ८९
सोई सुहागनि साँच सिंगार	... ९०
सोई साध सिरोमणी, गोविंद गुण गावै	...१०२
सँग न छाँड़ौं मेरा पावन पीव	... ८८
हिंदू तुरक न जाणौं दोइ	...१०२

रैदास

अब हम खूब वतन घर पाया	... १०६
अब कैसे छुटै नाम रट लागी	... ११२
आज दिवस लेऊँ बलिहारा	... १११
ऐसो कछु अनुभव कहत न आवै	... १०४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

भजन	पृष्ठ
कवन भगतिते रहै प्यारो पाहुनो रे ...	१११
गाइ गाइ अबका कहि गाऊँ ...	१०३
जब रामनाम कहि गावैगा ...	१०५
जो तुम तोरौ राम मैं नाहिं तोरौं ...	१०९
देहु कलाली एक पियाला ...	१०८
पार गया चाहै सब कोई ...	१०८
यह अँदेस सोच जिय मेरे ...	१०९
रामा हो जगजीवन मोरा ...	१०६
राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊँ ...	१०७
सो कहा जानै पीर पराई ...	११०

मलूकदास

अब तेरी सरन आयो राम ...	११४
ऐ अजीज ईमान तू, काहेको खोवै ...	११८
कौन मिलावै जोगिया हो ...	११५
गरब न कीजै बावरे, हरि गरब प्रहारी ...	११८
तेरा मैं दीदार दिवाना ...	११६
दरद-दिवाने बावरे, अलमस्त फकीरा ...	११६
दीनबन्धु दीनानाथ मेरी तन हेरिये ...	१२०
नाम हमारा खाक है, हम खाकी बन्दे ...	११७
ना वह रीझै जप तप कीन्हें ...	११९

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

भजन	पृष्ठ
राम कहो, राम कहो, राम कहो बावरे	··· ११९
सदा सोहागिन नारि सो	··· ११३
साँचा तू गोपाल, साँच तेरा नाम है	··· ११४
हरि समान दाता कोउ नाहीं	··· ११३
हमसे जनि लागै तू माया	··· ११७
चरनदास	
अब घर पाया हो मोहन प्यारा	··· १२८
कोइ दिन जीवै तौ कर गुजरान	··· १२८
गुरु हमरे प्रेम पियायौ हो	··· १२७
जिन्हें हरिभगति पियारी हो	··· १२७
झूलत कोइ कोइ संत लगन हिंडोलने	··· १२५
टुक रंगमहलमें आव कि निरगुन सेज बिछी	··· १२१
टुक निरगुन छैलाँ सू, कि नेह लगाव री	··· १२१
तरसै मेरे नैन हेली, राम-मिलन कब होयगो	··· १२२
प्रेमनगरके माहिं होरी होय रही	··· १२३
मो बिरहिनकी बात हेली, बिरहिन होइ जानि हैं	··· १२२
वह पुरुषोत्तम मेरा यार	··· १२४
समझ रस कोइक पावै हो	··· १२३
साधो निंदक मित्र हमारा	··· १२६
सुन सुरत रँगीली हो कि हरि-सा यार करौ	··· १२०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

भजन पृष्ठ

गुरु नानक

अब मैं कौन उपाय करूँ ... १३१
काहे रे बन खोजन जाई ... १३०
जगतमें झूठी देखी प्रीत ... १३३
जो नर दुखमें दुख नहिं मानै ... १३२
प्रभु मेरे प्रीतम प्रान पियारे ... १३१
मुरसिद मेरा मरहमी, जिन मरम बताया ... १३०
यह मन नेक न कह्यो करै ... १३२
या जग मीत न देख्यो कोई ... १३१
राम सुमिर, राम सुमिर, एही तेरो काज है ... १२९
सब कछु जीवतको ब्योहार ... १२९
हौं कुरबाने जाउँ पियारे ... १२९

दरिया साहब

कहा कहूँ मेरे पिउकी बात ... १३५
जाके उर उपजी नहिं भाई ... १३३
जो धुनियाँ तौ भी मैं राम तुम्हारा ... १३४
बाबक कैसे बिसरो जाई ... १३५
रामनाम नहिं हिरदे धरा ... १३६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

भजन-संग्रह

दूसरा भाग (पहला खण्ड)

हितहरिवंश

(१) गौरी

यह जु एक मन बहुत ठौर करि कहि कौने सचु पायो ।
जहँ तहँ बिपति जारि जुवती ज्यों प्रगट पिंगला गायो ॥
द्वै तुरंग पर जोर चढ़त हठि परत कौन पै धायो ।
कहि धौं कौन अंक पर राखै ज्यों गनिका सुत जायो ॥
हितहरिबंस प्रपंच बंच सब काल व्यालको खायो ।
यह जिय जानि स्याम-स्यामा पद कमल संगि सिर नायो ॥

(२) पद

तातें भैया, मेरी सौं, कृष्ण-गुन-संचु ।
कुत्सित बाद बिकारहि परधन
सुनु सिख परतिय बंचु ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

मनि गुन पुंज व्रजपति छाँड़त
हितहरिबंस सुकर गहि कंचु ॥ १ ॥
पायो जानि जगतमें सब जन
कपटी कुटिल कलिजुगी टंचु ।
इहि परलोक सकल सुख पावत,
मेरी सौं, कृष्ण-गुन संचु ॥ २ ॥

(३) बिलावल

मोहन लालके रँग राची ।
मेरे ख्याल परौ जिन कोऊ, बात दसो दिसि माची ॥
कंत अनंत करौ किन कोऊ, नाहिं धारना साँची ।
यह जिय जाहु भले सिर ऊपर, हौं तु प्रगट ह्वै नाची ॥
जाग्रत सयन रहत ऊपर मनि, ज्यों कंचन सँग पाँची ।
हितहरिबंस डरौं काके डर, हौं नाहिन मति काँची ॥

(४) भैरवी

रहौ कोउ काहू मनहि दियें ।
मेरे प्राननाथ श्रीस्यामा, सपथ करौं तिन छियें ॥
जे अवतार कदंब भजत हैं, धरि दृढ़ व्रत जु हियें ।
तेऊ उमगि तजत मरजादा, बन बिहार रस पियें ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

c Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS

खोये रतन फ़िरत जे घर-घर कौन काज इमि जियें ।
हितहरिबंस अनतु सचु नाहीं, बिन या रसहिं ळियें ॥

(५) बिहाग

प्रीति न काहु कि कानि बिचारै ।
मारग अपमारग बिथकित मन, को अनुसरत निवारै ॥
ज्यों पावस सरिता जल उमगत, सनमुख सिंधु सिधारै ।
ज्यों नादहिं मन दिये कुरंगनि, प्रगट पारधी मारै ॥
हितहरिबंसहिं लग सारँग ज्यों, सलभ सरीरहिं जारै ।
नाइक निपुन नवल मोहन बिनु, कौन अपनपौ हारै ॥

स्वामी हरिदास

(६) विभास

ज्योंहीं ज्योंहीं तुम राखत हौ
त्योंहीं त्योंहीं रहियतु है हो हरि ।
और अचरचै पाइ धरों,
सु तौ कहौ कौनके पैंड भरि ॥
जदपि हौं अपनो भायो कियो चाहौं,
कैसे करि सकौं जो तुम राखौ पकरि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

कहि हरिदास पिंजराके जनावरलौं,
तरफराइ रह्यो उड़िवेको कितो उकरि ।

(७)

काहूको बस नाहिं तुम्हारी कृपा तें,
सब होय बिहारी बिहारिनि ।
और मिथ्या प्रपंच काहेको भाषियै,
सो तो है हारनि ॥ १ ॥
जाहि तुमसों हित ताहि तुम हित करौ,
सब सुख कारनि ।
श्रीहरिदासके स्वामी स्यामा कुंजबिहारी,
प्राननिके आधारनि ॥ २ ॥

(८) आसावरी

हित तौ कीजै कमलनैनसों,
जा हित आगे और हित लागो फीको ।
कै हित कीजै साधुसँगतिसों,
जावै कलमष जी को ॥ १ ॥
हरिको हित ऐसो जैसो रंग मजीट,
संसार हित कसूंभि दिन दुतीको ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

कहि हरिदास हित कीजै बिहारीसों,
और न निबाहु जानि जी को ॥ २ ॥

(९)

तिनका बयारिके बस ।
ज्यों भावै त्यों उड़ाइ लै जाइ आपने रस ॥
ब्रह्मलोक, सिवलोक और लोक अस ।
कह हरिदास बिचारि देख्यो बिना बिहारी नाहीं जस ॥

(१०)

हरिके नामको आलस क्यों,
करत है रे काल फिरत सर साँधैं ।
हीरा बहुत जवाहर संचे,
कहा भयो हस्ती दर बाँधैं ॥
बेर कुबेर कछू नहिं जानत,
चढ़ो फिरत है काँधैं ।
कहि हरिदास कछू न चलत जब,
आवत अंत की आँधैं ॥

(११)

मन लगाइ प्रीति कीजै कर करवा सों,
ब्रजबीथिन दीजै सोहिनी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

बृंदावन सों, बन उपबन सों,
गुंज माळ कर पोहिनी ॥
गो गोसुतन सों मृग मृगसुतन सों,
और तन नेक न जोहिनी ।
श्रीहरिदासके स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सों,
चित ज्यों सिरपर दोहिनी ॥

(१२) कल्यान

हरिको ऐसोइ सब खेल ।
मृग-तृस्ना जग व्याप रही हैं, कहूँ बिजोरो न बेल ॥
धनमद जोबनमद और राजमद, ज्यों पंछिनमें डेल ।
कह हरिदास यहै जिय जानौ, तीरथको सो मेल ॥

(१३)

जौ लों जीवै तौ लौं हरि भजु रे मन, और बात सब बादि ।
दिवस चारिको हला भला तू कहा लेइगो लादि ॥
मायामद गुनमद जोबनमद, भूल्यौ नगर बिबादि ।
कहि हरिदास लोभ चरपट भयो काहेकी लागै फिरादि ॥

(१४)

प्रेमसमुद्र रूपरस गहिरे, कैसे लागैं घाट ।
बेकारयो दै जानि कहावत,
जानि पनोकी कहा परी बाट ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IK

काहूको सर परै न सूधो,
मारत गाळ गली गळी हाट ।
कहि हरिदास बिहारिहिं जानौ,
तकौ न औघट घाट ॥

(१५) विहाग

गहौ मन सब रसको रस सार ।
लोक बेद कुळ करमै तजिये, भजिये नित्य बिहार ॥
गृह कामिनि कंचन धन त्यागौ, सुमिरौ स्याम उदार ।
कहि हरिदास रीति संतनकी, गादीको अधिकार ॥

गदाधर भट्ट

(१६)

सखी, हौं स्याम रंग रँगी ।
देखि बिकाइ गयी वह मूरति, सूरति माहि पगी ॥ १ ॥
संग हुतो अपनो सपनो सो, सोइ रही रस खोई ।
जागेहु आगे दृष्टि परै सखि, नेकु न न्यारो होई ॥ २ ॥
एक जु मेरी अँखियनमें निसिद्योस रह्यो करि भौन ।
गाइ चरावन जात सुन्यो सखि,सो धौं कन्हैया कौन॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

कासों कहौं कौन पतियावै, कौन करै बकवाद ।
कैसे कै कहि जात गदाधर, गूँगेको गुड़ स्वाद ॥ ४ ॥

(१७) विभास

दिन दूलह मेरो कुँवर कन्हैया ।
नितप्रति सखा सिंगार सँवारत,
नित आरती उतारति मैया ॥ १ ॥
नितप्रति गीत वाद्य मंगल धुनि,
नित सुर मुनिवर बिरद कहैया ।
सिरपर श्रीब्रजराज राजवित,
तैसेई ढिग बलनिधि बल भैया ॥ २ ॥
नितप्रति रासबिलास ब्याहबिधि,
नित सुर-तिय सुमननि बरसैया ।
नित नव नव आनंद वारिनिधि,
नित ही गदाधर लेत बलैया ॥ ३ ॥

(१८) ध्रुपद

श्रीगोविन्द पद-पल्लव सिर पर बिराजमान,
कैसे कहि आवै या सुखको परिमान ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

ब्रजनरेस देस बसत कालानल हू त्रसत,
बिलसत मन हुलसत करि लीलामृत पान ॥ १ ॥
भीजे नित नयन रहत प्रभुके गुनग्राम कहत,
मानत नहिं त्रिबिधताप जानत नहिं आन ।
तिनके मुखकमल दरस पातन पद-रेनु परस,
अधम जन गदाधरसे पावैं सनमान ॥ २ ॥

(१९) श्री

नमो नमो जय श्रीगोबिंद ।
आनँदमय ब्रज सरस सरोवर,
प्रगटित बिमल नील अरबिंद ॥ १ ॥
जसुमति नीर नेह नित पोषित,
नव-नव ललित लाड़ सुखकंद ।
ब्रजपति तरनि प्रताप प्रफुल्लित,
प्रसरित सुजस सुवास अमंद ॥ २ ॥
सहचरि जाल मराल संग रँग,
रसभरि नित खेलत सानंद ।
अलि गोपीजन नैन गदाधर,
सादर पिवत रूपमकरंद ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

(२०) सारंग

हरि हरि हरि हरि रट रसना मम ।
पीवति खाति रहति निधरक भई होत कहा तो को स्रम ॥
तैं तो सुनी कथा नहिं मोसे, उधरे अमित महाधम ।
ग्यान ध्यान जप तप तीरथ व्रत, जोग जाग बिनु संजम ॥
हेमहरन द्विजद्रोह मान मद, अरु पर गुरु दारागम ।
नामप्रताप प्रबल पावकके, होत जात सलभा सम ॥
इहि कलिकाल कराल ब्याल, विषज्वाल बिषम भोये हम ।
बिनु इहि मंत्र गदाधरके क्यों, मिटिहै मोह महातम ॥

(२१) आसावरी

है हरितें हरिनाम बड़ेरो
ताकों मूढ़ करत कत झेरो ॥ १ ॥
प्रगट दरस मुचुकुंदहिं दीन्हों,
ताहू आयुसु भो तप केरो ॥ २ ॥
सुतहित नाम अजामिल लीनों,
या भवमें न कियो फिर फेरो ॥ ३ ॥
पर-अपवाद स्वाद जिय राच्यो,
बृथा करत बकवाद घनेरो ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

कौन दसा ह्वैहै जु गदाधर,
हरि हरि कहत जात कहा तेरो ॥ ५ ॥

(२२) सारंग

कबै हरि, कृपा करिहौ सुरति मेरी ।
और न कोऊ काटनको मोह वेरी॥ १ ॥
काम लोभ आदि ये निरदय अहेरी ।
मिलिकै मन मति मृगी चहूँधा घेरी॥ २ ॥
रोपी आइ पास-पासि दुरासा केरी ।
देत वाहीमें फिरि फिरि फेरी ॥ ३ ॥
परी कुपथ कंटक आपदा घनेरी ।
नैक ही न पावति भजि भजन सेरी ॥ ४ ॥
दंभके आरंभ ही सतसंगति डेरी ।
करै क्यों गदाधर बिनु करुना तेरी ॥ ५ ॥

(२३) दंडक

जयति श्रीराधिके सकलसुखसाधिके
तरुनिमनि नित्य नवतन किसोरी ।
कृष्णतनु लीन मन रूपकी चातकी
कृष्णमुख हिमकिरिनको चकोरी ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

कृष्णदृग भृंग विस्रामहित पद्मिनी
कृष्णदृग मृगज बंधन सुडोरी ।
कृष्ण-अनुराग मकरंदकी मधुकरी
कृष्ण-गुन-गान रस-सिंधु बोरी ॥ २ ॥
बिमुख परचित्त ते चित्त जाको सदा
करत निज नाहकी चित्त चोरी ।
प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनैं
अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥ ३ ॥

(२४) दंडक

जय महाराज ब्रजराज-कुल-तिलक
गोविंद गोपीजनानंद राधारमन ।
नंद-नृप-गेहिनी गर्भ आकर रतन
सिष्ट-कष्टद धृष्ट दुष्ट दानव-दमन ॥ १ ॥
बल-दलन-गर्व-पर्वत-बिदारन
ब्रज-भक्त-रच्छा-दच्छ गिरिराजधर धीर ।
बिबिध वेला कुसल मुसलधर संग लै
चारु चरणांक चित तरनि तनया तीर ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

कोटि कंदर्प दर्पापहर लावन्य धन्य
बृंदारन्य भूषन मधुर तरु ।
मुरलिकानाद पियूषनि महानंदन
विदित सकल ब्रह्म रुद्रादि सुरकरु ॥ ३ ॥
गदाधरविषै बृष्टि करुना दृष्टि करु
दीनको त्रिविध संताप ताप तवन ।
मैं सुनी तुव कृपा कृपन जन-गामिनी
बहुरि पैहै कहा मो बराबर कवन ॥ ४ ॥

(२५) हिंडोल

झूलत नागरि नागर लाल ।
मंद मंद सब सखी झुलावति, गावति गीत रसाल ॥
फरहराति पट पीत नीलके, अंचल चंचल चाल ।
मनहुँ परसपर उमँगि ध्यान छबि, प्रगट भई तिहिं काल ॥
सिलसिलात अति प्रिया सीस तें, लटकति बेनी नाल ।
जनु पिय मुकुट बरहि भ्रम बसतहँ, ब्याली बिकल बिहाल ॥
मल्ली माल प्रियाकी उरझी, पिय तुलसी दल माल ।
जनु सुरसरि रबितनया मिलिकै, सोभित स्रेनि मराल ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

स्यामल गौर परसपर प्रति छबि, सोभा बिसद बिसाल ।
निरखि गदाधर रसिक कुँवरि मन, परयो सुरस जंजाल ॥

(२६) गौरी

आजु ब्रजराजको कुँवर बनते बन्यो,
देखि आवत मधुर अधर रंजित वेनु ।
मधुर कलगान निज नाम सुनि स्रवन-पुट,
परम प्रमुदित बदन फेरि हूँकति धेनु ॥ १ ॥
मदबिघूर्णित नैन मंद बिहँसनि बैन,
कुटिल अलकावली ललित गोपद रेनु ।
ग्वाल-बालनि जाल करत कोलाहलनि,
सृंग दल ताल धुनि रचत संचत कैनु ॥ २ ॥
मुकुटकी लटक अरु चटक पटपीतकी
प्रगट अकुरित गोपी मनहिं मैनु ।
कहि गदाधरजु इहि न्याय ब्रजसुन्दरी
बिमल बनमालके बीच चाहतु ऐनु ॥ ३ ॥

(२७) गारी

सुंदर स्याम सुजानसिरोमनि,
देउँ कहा कहि गारी हो ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

वड़े लोगके औगुन बरनत,
सकुचि उठत मन भारी हो ॥ १ ॥
को करि सकै पिताको निरनौ
जाति-पाँति को जाने हो ।
जाके मन जैसीयै आवत
तैसिय भाँति बखानै हो ॥ २ ॥
माया कुटिल नटी तन चितवत
कौन बड़ाई पाई हो ।
इहि चंचल सब जगत बिगोयो
जहँ तहँ भई हँसाई हो ॥ ३ ॥
तुम पुनि प्रगट होइ बारे तें
कौन भलाई कीनी हो ।
मुकति-बधू उत्तम जन लायक
लै अधमनिकों दीनी हो ॥ ४ ॥
बसि दस मास गरभ माताके
इहि आसा करि जाये हो ।
सो घर छाँड़ि जीभके लालच
भयो हो पूत पराये हो ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

बारेतें गोकुल गोपिनके
सूने घर तुम डाटे हो।
पैठे तहाँ निसंक रंक लौं
दधिके भाजन चाटे हो॥ ६॥
आपु कहाइ धनीको ढोटा
भात कृपन लौं माँग्यो हो।
मान भंग पर दूजें जाचतु
नैकु सँकोच न लाग्यो हो॥ ७॥
लोलुप तातें गोपिनके तुम
सूने भवन ढँढोरे हो।
जमुना न्हात गोप-कन्यनिके
निलज निपट पट चोरे हो॥ ८॥
बैनु बजाइ विलास करत बन
बोलि पराई नारी हो।
ते बातें मुनिराज सभामें
है निसंक बिस्तारी हो॥ ९॥
सब कोउ कहत नंदबाबाको
घर भरथो रतन अमोलै हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

गर गुंजा सिर मोर-पखौवा
गायनके सँग डोलै हो ॥१०॥
साधु-सभामें बैठनिहारो
कौन तियन सँग नाचै हो ।
अग्रज संग राज-मारगमें
कुबजहिं देखत लाचै हो ॥११॥
अपनि सहोदरि आपुहि छल करि
अरजुन संग नसाई हो ।
भोजन करि दासी-सुतके घर
जादव जाति लजाई हो ॥१२॥
लै लै भजे नृपतिकी कन्या
यह धौं कौन बड़ाई हो ।
सतभामा गोतमें विवाही
उलटी चाल चलाई हो ॥१३॥
बहिन पिताकी सास कहाई
नैकहु लाज न आई हो ।
ऐसेइ भाँति विधाता दीन्हीं
सकल लोक ठकुराई हो ॥१४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

मोहन बसीकरन चट चेटक
मंत्र जंत्र सब जानै हो।
तात भले जु भले सब तुमको
भले भले करि मानै हो ॥१५॥
बरनौं कहा जथा मति मेरी
बेदहु पार न पावै हो।
भट्ट गदाधर प्रभुकी महिमा
गावत ही उर आवै हो ॥१६॥

नन्ददास

(२८)

राम-कृष्ण कहिये उठि भोर।
अवध-ईस वे धनुष धरे हैं, यह ब्रज-माखन चोर ॥
उनके छत्र चँवर सिंहासन, भरत सत्रुहन लछमन जोर।
इनके लकुट मुकुट पीताम्बर, नित गायन सँग नंद-किसोर
उन सागरमें सिला तराई, इन राख्यौ गिरि नखकी कोर।
'नंददास' प्रभु सब तजि भजिये, जैसे निरखत चंद चकोर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

(२९)

जो गिरि रुचै तौ बसौ श्रीगोवर्धन,
गाम रुचै तौ बसौ नँदगाम ।
नगर रुचै तौ बसौ श्रीमधुपुरी,
सोभासागर अति अभिराम ॥ १ ॥
सरिता रुचै तौ बसौ श्रीजमुनातट,
सकल मनोरथं पूरन काम ।
'नंददास' कानन रुचै तौ,
बसौ भूमि बृंदावन-धाम ॥ २ ॥

कुम्भनदास

(३०) सारंग

भगतकौ कहा सीकरी काम ।
आवत जात पन्हैया टूटी बिसरि गयो हरिनाम ॥
जाको मुख देखे दुख लागै ताकों करन परी परनाम ।
कुंभनदास लाल गिरधर बिन यह सब झूठौ धाम ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

(३१) धनाश्री

नैन भरि देख्यौ नंदकुमार ।
ता दिनतें सब भूलि गयौ हों बिसरयौ पन परवार ॥
बिन देखे हौं बिकल भयौं हौं अंग-अंग सब हारि ।
ताते सुधि है साँवरि मूरतिकी लोचन भरि भरि वारि ॥
रूप-रास पैमित नहीं मानों कैसें मिलै लो कन्हाइ ।
कुंभनदास प्रभु गोवरधन-धर मिलियै बहुरि री माइ ॥

(३२)

हिलगिन कठिन है या मनकी ।
जाके लिये देखि मेरी सजनी लाज गयी सब तनकी ॥
धरम जाउ अरु लोग हँसौं सब अरु गावौ कुल गारी ।
सो क्यों रहै ताहि बिनु देखे जा जाकौ हितकारी ॥
रसलुबधक निमिख न छाँड़त है ज्यों अधीन मृग गानों ।
कुंभनदास सनेह परम श्रीगोवरधन-धर जानों ॥

(३३) सारंग

जो पै चोंप मिलनकी होय ।
तौ क्यों रहै ताहि बिनु देखे लाख करौ जिन कोय ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

जो यह बिरह परस्पर ब्यापै जौ कछु जीवन बनै ।
लोकलाज कुलकी मरजादा एकौ चित्त न गनै ॥
कुंभनदास प्रभु जाय तन लागी और न कछू सुहाय ।
गिरधर लाल तोहि बिनु देखे छिन-छिन कलप बिहाय ॥

परमानन्ददास

(३४) बिहागरौ

ब्रजके बिरही लोग बिचारे ।
बिन गोपाल ठगेसे ठाढ़े अति दुरबल तन हारे ॥
मात जसोदा पंथ निहारत निरखत साँझ सकारे ।
जो कोइ कान्ह कान्ह कहि बोलत अँखियन बहत पनारे॥
यह मथुरा काजरकी रेखा जे निकसे ते कारे ।
परमानंद स्वामि बिनु ऐसे ज्यों चंदा बिनु तारे ॥

(३५) कान्हरा

कौन रसिक है इन बातनकौ ।
नंद-नँदन बिन कासों कहिये
सुन री सखी मेरौ दुख या मनकौ ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

कहाँ वह जमुनापुलिन मनोहर
कहाँ वह चंद सरद रातिनकौ ।
कहाँ वह मंद सुगन्ध अमल रस
कहाँ वह षटपद जलजातनकौ ॥ २ ॥
कहाँ वह सेज पौढ़िबौ बनकौ
फूल बिछौना मृदु पातनकौ ।
कहाँ वह दरस परस परमानँद
कोमल तन कोमल गातनकौ ॥ ३ ॥

(३६) सारंग

जियकी साधन जिय ही रही री ।
बहुरि गोपाल देखि नहिं पाये बिलपत कुंज अहीरी ॥
एक दिन सोंज समीप यहि मारग बेचन जात दही री ।
प्रीतके लएँ दानमिस मोहन मेरी बाँह गही री ॥
बिन देखे घड़ि जात कलप सम बिरहा अनल दही री ।
परमानंद स्वामि बिनु दरसन नैनन नींद बही री ॥

(३७) बिलावल

जसौदा तेरे भागकी कही न जाय ।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुरलभ सो प्रगटे हैं आय ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

सिव नारद सनकादि महामुनि मिलिबे करत उपाय ।
ते नँदलाल धूरि-धूसर-वपु रहत गोद लिपटाय ॥
रतन जड़ित पौढ़ाय पालनै बदन देखि मुसुकाइ ।
झूलौ मेरे लाल बलिहारी परमानंद जस गाइ ॥

(३८) पूरवी

मेरौ माई माधो सों मन लाग्यौ ।
मेरौ नैन अरु कमलनैनकौ इकठौरौ करि मान्यौ ॥
लोक वेदकी कानि तजी मैं न्यौती अपने आन्यौ ।
इक गोबिंद चरनके कारन बैर सबनसों ठान्यौ ॥
अबको भिन्न होय मेरी सजनी! दूध मिल्यौ जैसे पान्यौ ।
परमानंद मिली गिरिधरसों है पहली पहचान्यौ ॥

कृष्णदास

(३९) देवगंधार

जब तें स्याम सरन हौं पायौ ।
तबतें भैंट भई श्रीवल्लभ, निज पति नाम बतायौ ॥
और अविद्या छाँड़ि मलिन मति, स्तुतिपथ आय दृढ़ायौ ।
कृष्णदास जन चहुँ जुग खोजत, अब निहचै मन आयौ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

(४०) बिलावल

बाल दसा गोपालकी सब काहू प्यारी ।
लै लै गोद खिलावहीं, जसुमति महतारी ॥ १ ॥
पीत झँगुलि तन सोहहीं सिर कुलहि बिराजै ।
छुद्रघंटिका कटि बनी, पाय नूपुर बाजै ॥ २ ॥
मुरि मुरि नाचै मोर ज्यों सुर नर मुनि मोहै ।
कृष्णदास प्रभु नंदके आँगनमें सोहै ॥ ३ ॥

(४१) गौरी

मो मन गिरिधरछबिपै अटक्यौ ।
ललित त्रिभंग चालपै चलिकै,
चिबुक चारु गड़ि ठटक्यौ ॥ १ ॥
सजल स्याम घन बरन लीन है,
फिर चित अनत न भटक्यौ ।
कृष्णदास किये प्रान निछावर,
यह तन जग सिर पटक्यौ ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

व्यासजी

(४२) सारंग

राधा बल्लभ मेरौ प्यारौ ।
सरवोपरि सबहीकौ ठाकुर, सब सुखदानि हमारौ ॥
ब्रज बृंदावन नाइक सेवालाइक स्याम उज्यारौ ।
प्रीत रीत पहचानै जानै रसिकनकौ रखवारौ ॥
स्याम कमल-दल-लोचन मोचन दुख नैननकौ तारौ ।
अवतारी सब अवतारनकौ महतारी महतारौ ॥
मूरतिवंत काम गोपिनको गाय गोप को गारौ ।
व्यासदासकौं प्रान सजीवन छिनभर हृदय न टारौ ॥

(४३) सारंग

बृंदाबनकी सोभा देखे मेरे नैंन सिरात ।
कुंज निकुंज पुंज सुख बरसत हरषत सबकौ गात ॥
राधा मोहनके निज मंदिर महाप्रलय नहिं जात ।
ब्रह्मातें उपज्यो न अखंडित कबहूँ नाहिं नसात ॥
फनिपर रवि तरि नहिं बिराट महँ नहिं संध्या नहिं प्रात ।
माया कालरहित नित नूतन सदा फूल फळ पात ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

निरगुन सगुन ब्रह्मतें न्यारौ बिहरत सदा सुहात।
ब्यास बिलास रास अदभुत गति, निगम अगोचर बात॥

(४४) चर्चरी

नव चक्र चूड़ा नृपति मन साँवरौ,
राधिका तरुनिमनि पट्टरानी।
सेस ग्रह आदि बैकुंठ परिजंत सब,
लोक थानैत ब्रज राजधानी॥ १॥
मेघ छ्यानवै कोटि बाग सींचत जहाँ,
मुक्ति चारौ तहाँ भरति पानी।
सूर ससि पाहरू पवन जन इंदिरा,
चरनदासी भाट निगम बानी॥ २॥
धर्म कुतवाल सुक सूत नारद चारु,
फिरत चर चारि सनकादि ग्यानी।
सत्तगुन पौरिया काल बँधुवा जहाँ,
कर्म बस कामरति सुख निसानी॥ ३।
कनक मरकत धरनि कुंज कुसुमिति महल,
मध्यकमनीय सयनीय ठानी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

पल न बिछुरत दुऊ जात नहिं तहँ कोऊ,
ब्यास महलनि लिये पीकदानी ॥ ४ ॥

(४५) धनाश्री

हरिदासनके निकट न आवत प्रेत पितर जमदूत ।
जोगी भोगी संन्यासी अरु पंडित मुंडित धूत ॥
ग्रह गन्नेस सुरेस सिवा सिव डर करि भागत भूत ।
सिधि निधि बिधि निषेध हरिनामहिं डरपत रहत कुपूत ॥
सुख-दुख पाप-पुन्य मायामय ईति-भीति आकूत ।
सबकी आसत्रास तजि ब्यासहि भावत भगत सपूत ॥

(४६) सारंग

रसिक अनन्य हमारी जाति ।
कुलदेवी राधा, बरसानौ खेरौ,
ब्रजबासिन सों पाँति ॥ १ ॥
गोत गोपाल, जनेऊ माला,
सिखा सिखंडि, हरि-मंदिर भाल ।
हरिगुन नाम बेद धुनि सुनियत,
मूँज पखावज कुस करताल ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

साखा जमुना, हरि-लीला षटकरम
प्रसाद प्रान धन रास ।
सेवा विधि-निषेध जड़ संगति,
बृत्ति सदा बृंदाबन बास ॥ ३ ॥
सम्मृति भागवत, कृष्ण नाम संध्या,
तरपन गायत्री जाप ।
बंसी रिषि जजमान कलपतरु
व्यास न देत असीस सराप ॥ ४ ॥

(४७)

ऐसे ही बसिये ब्रजबीथिन ।
साधुनके पनवारे चुनि चुनि,
उदर पोषियत सीथिन ॥ १ ॥
घूरनमेंके बीनि चिनगटा
रच्छा कीजै सीतन ।
कुंज कुंज प्रति लोटि लगै उड़ि
रज ब्रजकी अंगीतन ॥ २ ॥
नितप्रति दरस स्याम-स्यामाको
नित जमुना जल पीतन ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

ऐसेहि व्यास रुचै तन पावन
ऐसेहि मिलत अतीतन ॥ ३ ॥

(४८)

जैये कौनके अब द्वार ।
जो जिय होय प्रीति काहूके दुख सहिये सौ बार ॥
घर-घर राजस तामस बाढ़्यो, धन-जोबनकौ गार ।
काम-बिबस ह्वै दान देत नीचनकों होत उदार ॥
साधु न सूझत बात न बूझत ये कलिके ब्यौहार ।
व्यासदास कत भाजि उबरियै परियै माँझीधार ॥

(४९)

कहा-कहा नहिं सहत सरीर ।
स्याम-सरन बिनु करम सहाइन जनम-मरनकी पीर ॥
करुनावंत साधु-संगति बिनु, मनहि देय को धीर ।
भगति भागवत बिनु, को मेटै, सुख दै दुखकी भीर ॥
बिनु अपराध चहूँ दिसि बरषत पिसुन बचन अति तीर ।
कृष्ण-कृपा कवचीतें उबरै पावै तबही सीर ॥
चेतहु भैया, बेगि बढ़ी कलिकाल नदी गंभीर ।
व्यास बचन बलि बृंदाबन बसि, सेवहु कुंज कुटीर ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

(५०)

भजौ सुत, साँचे स्याम पिताहि ।
जाके सरन जात ही मिटिहै दारुन दुखकी दाहि ॥
कृपावंत भगवंत सुने मैं छिनि छाँड़ौ जिनि ताहि ।
तेरे सकल मनोरथ पूजैं जो मथुरा लौं जाहि ॥
वै गोपाल दयाल दीन तू, करिहैं कृपा निबाहि ।
और न ठौर अनाथ दुखिन कौं मैं देख्यौ जग माँहि ॥
करुना बरुनालयकी महिमा मोपै कही न जाहि ।
ब्यासदासके प्रभुको सेवत हारि भई कहु काहि ? ॥

(५१) सारंग

धरम दुरयो कलिराज दिखाई ॥
कीनों प्रगट प्रताप आपनौ सब बिपरीत चलाई ।
धन भौ मीत, धरम भौ बैरी पतितन सो हितवाई ॥
जोगी जती तपी संन्यासी व्रत छाँड्यो अकुलाई ।
बरनास्रमकी कौन चलावै संतनहूमें आई ॥
देखत संत भयानक लागत भावतै ससुर जमाई ।
संपति सुकृत सनेह मान चित ग्रह ब्यौहार बड़ाई ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

कियो कुमंत्री लोभ आपुनों महामोह जु सहाई ।
काम क्रोध मद मोह मत्सरा दीन्हीं देस दुहाई ॥
दान लैनकों बड़े पातकी मचलनकौं बँभनाई ।
लरन मरनकों बड़े तामसी वारौं कोटि कसाई ॥
उपदेसनकौं गुरू गोसाईं आचरनैं अधमाई ।
व्यासदासके सुकृत साँकरेमें गोपाल सहाई ॥

(५२)

साधन बैरागी जड़ बंग ।
धातु रसायन औषध सेवत निसिदिन बढ़त अनंग ॥
सुक-बचननकौ रंग न लाग्यौ भयौ न संसै भंग ।
विष बिकारगुन उपजै बित लगि सबै करत चित भंग ॥
बनमें रहत गहत कामिनि कुच सेवत पीन उतंग ।
धनि धनि साधु ! दंभकी मूरति, दियो छाड़ि हरि संग ॥
लोभ बचन वाननि अँग-अंगनि सोभित निकर निषंग ।
व्यास आस जम पासि गरे, तिहि भावै राग न रंग ॥

(५३)

जो दुख होत बिमुख घर आये ।
ज्यौं कारौ लागे कारी निसि, कोटिक बीछू खाये ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

दुपहर जेठ जरत बारूमें घायन लौन लगाये।
काँटन माँझ फिरै बिनु पनहीं, मूड़ै टोला खाये ॥
ज्यों बाँझहिं दुख होत सौतिकौ सुंदर बेटा जाये।
देखतही मुख होत जितौ दुख बिसरत नहिं बिसराये ॥
भटकत फिरत निलज बरजत ही कूकर ज्यों झहराये।
गारी देत बिलग नहिं मानत फूलत दमरी पाये ॥
अति दुख दुष्ट जगतमें जेते नैक न मेरे भाये।
भूलि दरस नहिं कीजौ वाकौ, ब्यास बचन बिसराये ॥

(५४)

सुने न देखे भगत भिखारी।
तिनके दाम कामकौ लोभ न जिनके कुंजबिहारी ॥
सुक नारद अरु सिव सनकादिक, जे अनुरागी भारी।
तिनको मत भागवत न समुझै सबकी बुधि पचि हारी ॥
रसना इंद्री दोऊ बैरिन जिनकी अनी अन्यारी।
करि आहार बिहार परसपर बैर करत बिभचारी ॥
बिप्रइनिकी परतीति न हरिसों प्रीति रीति बाजारी।
ब्यास आस-सागरमें बूड़ै आई भगति बिसारी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

(५५)

जो सुख होत भगत घर आये ।
सो सुख होत नहीं बहु संपति, बाँझहिं बेटा जाये ॥
जो सुख होत भगत चरनोदक पीवत गात लगाये ।
सो सुख सपनेहु नहिं पैयत कोटिक तीरथ न्हाये ॥
जो सुख भगतनको मुख देखत उपजत दुख बिसराये ।
सो सुख होत न कामिहिं कबहूँ कामिनि उर लपटाये ॥
जो सुख कबहुँ न पैयत पितु घर सुतको पूत खिलाये ।
सो सुख होत भगत बचननि सुनि नैननि नीर बहाये ॥
जो सुख होत मिलत साधुनसों छिन-छिन रंग बढाये ।
सो सुख होत न नेक ब्यासकों लंक सुमेरहु पाये ॥

(५६)

हरि बिनु को अपनो संसार ।
माया मोह बँध्यो जग बूड़त, काल नदीकी धार ॥
जैसे संघट होत नावमें रहत न पैले पार ।
सुत संपति दारा सों ऐसे बिछुरत लगै न बार ॥
जैसे सपने रंक पाय निधि जानै कछू न सार ।
ऐसे छिनभंगुर देहीके गरबहि करत गँवार ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

जैसे अंधरे टेकत डोलत गनत न खाइ पनार ।
ऐसे व्यास बहुत उपदेसे सुनि-सुनि गये न पार ॥

(५७)

कहत सुनत बहुतै दिन बीते भगति न मनमें आई ।
स्यामकृपा बिनु, साधुसंग बिनु कहि कौने रति पाई ॥
अपने अपने मत-मद भूले करत आपनी भाई ।
कह्यो हमारौ बहुत करत हैं, बहुतनमें प्रभुताई ॥
मैं समझी सब काहु न समझी, मैं सबहिन समझाई ।
भोरे भगत हुते सब तबके, हमरे बहु चतुराई ॥
हमही अति परिपक्क भये औरनिकै सबै कचाई ।
कहनि सुहेली रहनि दुहेली बातनि बहुत बड़ाई ॥
हरि मंदिर माला धरि, गुरु करि जीवनके सुखदाई ।
दया दीनता दासभाव बिनु मिलैं न व्यास कन्हाई ॥

(५८) कान्हरा

परमधन राधे नाम अधार ।
जाहि स्याम मुरलीमें टेरत, सुमिरत बारंबार ॥
जंत्र-मंत्र औ बेद तंत्रमें सबै तारकौ तार ।
श्रीसुक प्रगट कियो नहिं यातैं जानि सारको सार ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

कोटिन रूप धरे नँद-नंदन, तऊ न पायौ पार ।
ब्यासदास अब प्रगट बखानत, डारि भारमें भार ॥

श्रीभट्ट

(५९) पद

मदनगुपाल, सरन तेरी आयौ ;
चरनकमलकी सरन दीजिये,
चेरौ करि राखौ घर जायौ ॥ १ ॥
धनि-धनि मात-पिता सुत-बंधू,
धनि जननी जिन गोद खिलायौ ।
धनि-धनि चरन चलत तीरथकौ,
धनि गुरुजन हरिनाम सुनायौ ॥ २ ॥
जे नर बिमुख भये गोबिंदसों,
जनम अनेक महादुख पायो ।
श्रीभटके प्रभु दियौ अभय पद,
जन डरप्यौ जब दास कहायौ ॥ ३ ॥

(६०)

ब्रजभूमि मोहिनी मैं जानी ।
मोहन कुंज मोहन बृंदाबन मोहन जमुना पानी ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

मोहन नारि सकल गोकुलकी बोलति अमरतबानी।
श्रीभटके प्रभु मोहन नागर मोहनि राधारानी ॥ २ ॥

(६१)

सेव्य हमारे हैं पिय प्यारे बृंदा बिपिन-बिलासी।
नँद-नंदन बृषभानु-नंदिनी चरन अनन्य उपासी॥ १ ॥
मत्त प्रनयवस सदा एकरस बिबिध निकुंजनिवासी।
श्रीभट जुगुलरूप बंसीबट सेवत सब सुखरासी ॥ २ ॥

(६२)

स्यामा स्याम पद पावैं सोई।
मन-बच-क्रम करि सदा नित्य नेहि
हरि गुरु पदपंकज रति होई ॥ १ ॥
नंदसुवन बृषभानुसुता पद
भजै तजै मन आनै जोई।
श्रीभट अटकि रहे स्वामीपन
आन ब्रतै मानै सब छोई ॥ २ ॥

(६३)

जुगुलकिसोर हमारे ठाकुर।
सदा सरवदा हम जिनके हैं,
जनम जनम घरजाये चाकर ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding II

चूक परै परिहरैं न कबहूँ,
सबहीं भाँति दयाके आकर ।
जे श्रीभट्ट प्रगट त्रिभुवनमें,
प्रनतनि पोषत परम सुधाकर ॥ २ ॥

(६४)

बलि-बलि श्रीराधे-नँदनँदना ।
मेरे मनकी अमित अबटनी को जानै तुम बिना ॥
भलेई चारु चरन दरसाये ढूँढ़त फिरिहौं बृंदाबना ।
जै श्रीभट स्यामा स्यामरूप पै निवछावर तन-मना ॥

(६५)

राधे, तेरे प्रेमकी कापै कहि आवै ।
तेरीसी गोपकी तोपै बनि आवै ॥
मन-बच-क्रम दुरगम सदा तापै चरन छुवावै ।
जै श्रीभट मति बृषभानु तेज प्रताप जनावै ॥

(६६)

बसौ मेरे नैननिमें दोउ चंद ।
गौरबदनि बृषभानुनंदिनी, स्यामबरन नँदनंद ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

गोकुल रहे लुभाय रूपमें निरखत आनँदकंद ।
जै श्रीभट्ट प्रेमरस-बंधन, क्यों छूटै दृढ़ फंद ॥ २ ॥

सूरदास मदनमोहन

(६७) बधाई

नंदजू मेरे मन आनंद भयो, हौं गोबरधन तें आयौ ।
तुम्हरे पुत्र भयो, हौं सुनिकै अति आतुर उठि धायौ ॥
बंदीजन अरु भिच्छुक सुनि सुनि देस-देस तें आये ।
इक पहले ही आसा लागे बहुत दिनन तें छाये ॥
ते पहिरैं कंचन मनि मुकता नाना बसन अनूप ।
मोहि मिले मारगमें मानो जात कहूके भूप ॥
तुम तौ परम उदार नंदजू जोइ माँग्या सोइ दीनौं ।
ऐसौ और कौन त्रिभुवनमें तुम सरि साकौ कीनौं ॥
लच्छ हेतु तौ परयौ रहौं हौं बिनु देखे नहिं जैहौं ।
नंदराइ सुनि बिनती मेरी तबै बिदा भलि ह्वैहौं ॥
दीजै मोहिं कृपा करि साईं जो हौं आयौ मागन ।
जसुमति सुत अपने पाइनि चलि खेलत-आवै आँगन ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding II

जब तुम मदनमोहन कहि टेरौ यह सुनि हौं घर जाउँ ।
हौं तौ तेरो घरकौ ढाढ़ी सूरदास मो नाउँ ॥

(६८)

प्रगट भई सोभा त्रिभुवनकी भानु गोपके आइ ।
अदभुत रूप देखि ब्रजबनिता रीझीं लेत बलाइ ॥
नहिं कमला, नहिं सची, नहीं रति उपमाहू न समाइ ।
जा हित प्रगट भये ब्रजभूषन धन्य पिता धन माइ ॥
जुग जुग राज करो दोऊ जन इत तुव उत नँदराइ ।
उनके मदनमोहन तेरे स्यामा सूरदास बलि जाइ ॥

(६९) देस

मेरे गति तुमहीं अनेक तोष पाऊँ ।
चरन-कमल-नख-मनिपर बिषै-सुख वहाऊँ ।
घर घर जो डोलौं तौ हरि तुम्हैं लजाऊँ ॥ १ ॥
तुम्हरौ कहाइ कहौ कौन कौ कहाऊँ ।
तुमसे प्रभु छाँड़ि कहा दीननकौं धाऊँ ॥ २ ॥
सीस तुम्हैं नाय कहौ कौनकौ नवाऊँ ।
कंचन उर हार छाँड़ि काच क्यों बनाऊँ ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

सोभा सब हानि करूँ जगतकौं हसाऊँ ।
हाथीतें उतरि कहा गदहा चढ़ि धाऊँ ॥ ४ ॥
कुमकुमकौ लेप छाँड़ि काजर मुँह लाऊँ ।
कामधेनु घरमें तज अजा क्यों दुहाऊँ ॥ ५ ॥
कनकमहल छाड़ि क्योंऽब परन कुटी छाऊँ ।
पाइन जो पेलौ प्रभु तौ न अनत जाऊँ ॥ ६ ॥
सूरदास मदनमोहन जनम जनम गाऊँ ।
संतनकी पनहीकौ रच्छक कहाऊँ ॥ ७ ॥

(७०) बिलावल

मधुके मतवारे श्याम, खोलौ प्यारे पलकैं ।
सीस मुकुट लटा छुटी और छुटी अलकैं ॥ १ ॥
सुर-नर मुनि द्वार ठाढ़ दरसहेतु किलकैं ।
नासिकाके मोति सोहैं बीच लाल ललकैं ॥ २ ॥
कटि पीताम्बर मुरली कर स्रवन-कुंडल झलकैं ।
सूरदास मदनमोहन दरस दैहौं भलकैं ॥ ३ ॥

(७१) देस

चलौ री, मुरली सुनिये, कान्ह बजाई जमुना तीर ।
तजि लोकलाज कुलकी कानि गुरुजनकी भीर ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

जमुनाजल थकित भयो बछा न पावैं छीर ।
सुरविमान थकित भये थकित कोकिल-कीर ॥
देहकी सुधि बिसरि गई बिसरौ तनकौ चीर ।
मात तात बिसरि गये बिसरे बालक-बीर ॥
मुरली-धुनि मधुर बाजै कैसेकै धरौं धीर ।
सूरदास मदनमोहन जानत हौ परपीर ॥

नागरीदास

(७२)

हमारै मुरलीवारौ स्याम ।
बिनु मुरली बनमाल चन्द्रिका, नहिं पहिचानत नाम ॥
गोपरूप बृंदाबन-चारी, ब्रज-जन पूरन काम ।
याही सों हित चित बढ़ौ नित, दिन-दिन पल-छिन जाम॥
नंदीसुर गोवरधन गोकुल बरसानों बिस्राम ।
नागरिदास द्वारका मथुरा, इनसों कैसो काम ॥

(७३)

चरचा करी कैसे जाय ।
बात जानत कछुक हमसों, कहत जिय थहराय ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

कथा अकथ सनेहकी, उर नाहिं आवत और ।
बेद समृती उपनिषदकों, रही नाहिंन ठौर ॥
मनहिमें है कहनि ताकी, सुनत श्रोता नैन ।
सोऽब नागर लोग बूझत, कहि न आवत बैन ॥

(७४)

जो मेरै तन होते दोय ।
मैं काहू तें कछु नहिं कहतौ,
मोतें कछु कहतौ नहिं कोय ॥ १ ॥
एक जु तन हरि-बिमुखनके,
सँग रहतो देस-बिदेस ।
बिबिध भाँति के जग-दुख सुख जहँ
नहीं भगति-लवलेस ॥ २ ॥
एक जु तन सतसंग रंग रँगि,
रहतौ अति सुख पूर ।
जनम सफल कर लेतौ ब्रज बसि,
जहँ ब्रज जीवनमूर ॥ ३ ॥
द्वै तन बिन द्वै काज न ह्वैहैं,
आयु सु छिन-छिन छीजै ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

नागरिदास एक तनते अब,
कहौ कहा करि लीजै ॥ ४ ॥

(७५)

दरपन देखत, देखत नाहीं ।
वालापन फिर प्रगट स्याम कच, बहुरि स्वेत ह्वै जाहीं ॥
तीन रूप या मुखके पलटे, नहिं अयानता छूटी ।
नियरे आवत मृत्यु न सूझत, आँखें हियकी फूटी ॥
कृष्ण भगति सुख लेत न अजहूँ बृद्ध देह दुखरासी ।
नागरिया सोई नर निह्चै, जीवत नरकनिवासी ॥

(७६)

हरि जू अजुगत जुगत करेंगे ।
परवत ऊपर बहल काँचकी, नीके लै निकरेंगे ॥
गहिरे जल पाषान नाव बिच आछी भाँति तरेंगे ।
मैंन तुरंग चढ़े पावक बिच, नाहीं पिघरि परेंगे ॥
याहू ते असमंजस हो किन, प्रभु दृढ़ कर पकरेंगे ।
नागर सब आधीन कृपाके, हम इन डर न डरेंगे ॥

(७७)

दुहुँ भाँतिनकौ मैं फल पायौ ।
पाप किये ताते बिमुखन सँग. देस देस भटकायौ ।
तुच्छ कामना हित कुसंग बसि, झूठे लोभ लुभायौ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

कौन पुन्य अब वृंदावन बरसाने सुबस बसायौ।
आनँदनिधि व्रज अनन्य-मंडली, उर लगाय अपनायौ ॥
सुनिवेहूकों दुरलभ सो सब रस बिलास दरसायौ।
स्यामा-स्याम दास नागरकौ, कियो मनोरथ भायौ ॥

(७८)

हमारी सब ही बात सुधारी।
कृपा करी श्रीकुंजविहारिनि, अरु श्रीकुंजबिहारी ॥
राख्यौ अपने बृंदाबनमें, जिहि ठाँ रूप उजारी।
नित्य केलि आनंद अखंडित, रसिक संग सुखकारी ॥
कलह कलेस न ब्यापै इहि टाँ, ठौर बिस्व तें न्यारी।
नागरिदासहिं जन्म जितायो, बलिहारी बलिहारी ॥

(७९)

भगति बिन हैं सब लोग निखट्टू।
आपसमें लड़िबे भिड़िबेकों, जैसे जंगी टट्टू ॥
नित उनकी मति भ्रमत रहत है, जैसे लोलुप लट्टू।
नागरिया जगमें वे उछरत जिहि बिधि नटके बट्टू ॥

(८०)

कितेे दिन बिन बृंदावन खोये।
योंही बृथा गये ते अब लौं, राजस रंग समोये ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

छाँड़ि पुलिन फूलनकी सैया सूल सरनि सिर सोये ।
भीजे रसिक अनन्य न दरसे, बिमुखनिके मुख जोये ॥
हरि बिहारकी ठौरि रहे नहिं, अति अभाग्य बल बोये ।
कल्ह सराय बसाय भठ्यारी, माया राँड़ बिगोये ॥
इक रस ह्याँके सुख तजिकै ह्याँ, कबौं हँसे कबौं रोये ।
कियौ न अपनो काज, पराये भार सीसपर ढोये ॥
पायौ नहिं आनंद लेस मैं, सबै देस टकटोये ।
नागरिदास बसै कुंजनमें, जब सब बिधि सुख भोये ॥

(८१)

ब्रजबासीतें हरिकी सोभा ।

बैन अधर छबि भये त्रिभंगी, सो वा ब्रजकी गोभा ॥
ब्रज बन धातु बिचित्र मनोहर, गुंज पुंज अति सोहैं ।
ब्रजमोरनिको पंख सीसपर ब्रज जुवती मन मोहैं ॥
ब्रज-रजनीकी लगति अलकपै, ब्रजद्रुम फल अरु माल ।
ब्रज गउवनके पीछे आछे, आवत मद गज चाल ॥
बीच लाल ब्रजचंद सुहाये, चहूँ ओर ब्रज गोप ।
नागरिया परमेसुरहूकी ब्रज तें बाढ़ी ओप ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IK

ब्रज-सम और कोउ नहिं धाम ।

या ब्रजमें परमेसुरहूके सुघरे सुंदर नाम ॥
कृष्ण नाँव यह सुन्यो गर्गतें, कान्ह-कान्ह कहि बोलैं ।
बालकेलि रस मगन भये सब, आनँदसिंधु कलोलैं ॥
जसुदानंदन, दामोदर, नवनीत प्रिय, दधिचोर ।
चीरचोर, चितचोर, चिकनियाँ चातुर नवलकिशोर ॥
राधा-चंद-चकोर, साँवरौ, गोकुलचंद, दधिदानी ।
श्रीबृंदाबनचंद, चतुर चित, प्रेम-रूप अभिमानी ॥
राधारमन, सु राधावल्लभ, राधाकान्त, रसाल ।
बल्लभ-सुत, गोपीजन-वल्लभ, गिरवर-धर छविजाल ॥
रासबिहारी, रसिकबिहारी, कुंजबिहारी स्याम ।
बिपिनबिहारी, बंकबिहारी, अटल बिहारऽभिराम ।
छैलबिहारी, लालबिहारी, बनवारी, रसकंद ।
गोपीनाथ, मदनमोहन, पुनि बंसीधर, गोबिंद ।
ब्रजलोचन, ब्रजरमन, मनोहर, ब्रजउत्सव, ब्रजनाथ ।
ब्रजजीवन, ब्रजबल्लभ सबके, ब्रजकिशोर, सुभगाथ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding II

व्रजमोहन, व्रजभूषन, सोहन, व्रजनायक, व्रजचंद ।
व्रजनागर, व्रजछैल, छबीले, व्रजवर, श्रीनँदनंद ॥
व्रज आनँद, व्रजदूलह नितहीं, अति सुंदर व्रजलाल ।
व्रज गउवनके पाछे आछे, सोहत व्रजगोपाल ॥
व्रज संबंधी नाम लेते ये, व्रजकी लीला गावै ।
नागरिदासहि मुरलीवारो, व्रजको ठाकुर भावै ॥

भगवतरसिक

(८३) पद

लखी जिन लालकी मुसक्यान ।
तिनहिं बिसरी बेदबिधि, जप, जोग, संयम, ध्यान ॥
नेम, व्रत, आचार, पूजा, पाठ, गीता-ज्ञान ।
रसिक भागवत दृग दई असि, ऐंचिकै मुख म्यान ॥

(८४)

परसपर दोउ चकोर दोउ चंदा ।
दोउ चातक, दोउ स्वाती, दोउ घन,
दोउ दामिनी अमंदा ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

दोउ अरबिंद, दोऊ अलि लंपट,
दोउ लोहा, दोउ चुंबक ।
दोउ आसिक, महबूब दोउ मिलि,
जुरे जुराफा अंबक ॥ २ ॥
दोउ मेघ, दोउ मोर, दोउ मृग,
दोउ राग-रस-भीने ।
दोउ मनि बिसद, दोउ बर पन्नग,
दोउ बारि, दोउ मीने ॥ ३ ॥
भगवतरसिक बिहारिनि प्यारी,
रसिक बिहारी प्यारे ।
दोउ मुख देखि जियत अधरामृत
पियत होत नहिं न्यारे ॥ ४ ॥

(८५) सारंग

वेषधारी हरिके उर सालैं ।
लोभी, दंभी, कपटी नट-से, सिस्नोदरको पालैं ॥ १ ॥
गुरू भये घर घरमें डोलैं, नाम धनीको बेंचैं ।
परमारथ सपने नहिं जानैं पैसनहीको खैंचैं ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding II

कबहुँक बकता ह्वै बनि बैठे, कथा भागवत गावैं।
अरथ अनरथ कछू नहिं भाषैं, पैसनहीकों धावैं॥ ३ ॥
कबहुँक हरिमंदिरकों सेवैं, करैं निरंतर बासा।
भाव भगतिकौ लेस न जानैं, पैसनहीकी आसा॥ ४ ॥
नाचैं, गावैं, चित्र बनावैं, करैं काव्य चटकीली।
साँच बिना हरि हाथ न आवै, सब रहनी है ढीली॥ ५ ॥
बिनु बिवेक-बैराग भगति बिनु सत्य न एकौ मानौ।
भगवत बिमुख कपट चतुराई, सो पाखंडै जानौ॥ ६ ॥

(८६)

इतने गुन जामें सो संत।
श्रीभागवत मध्य जस गावत, श्रीमुख कमलाकंत॥
हरिकौ भजन साधुकी सेवा सर्बभूत पर दाया।
हिंसा, लोभ, दंभ, छल त्यागै, बिषसम देखै माया॥
सहनसील, आसय उदार अति, धीरजसहित बिबेकी।
सत्य वचन सबसों सुखदायक, गहि अनन्य ब्रत एकी॥
इंद्रीजित, अभिमान न जाकें, करै जगतकों पावन।
भगवतरसिक तासुकी संगति तीनहुँ ताप नसावन॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

(८७) गौरी

नमो नमो बृंदाबनचंद ।

नित्य, अनन्त. अनादि, एकरस,
पिय प्यारो विहरत स्वच्छन्द ॥ १ ॥

सत्त-चित्त-आनंदरूपमय
खग-मृग, द्रुम-बेली वर बृंद ।

भगवतरसिक निरंतर सेवत,
मधुप भये पीवत मकरंद ॥ २ ॥

(८८) ईमन

जय जय रसिक रवनीरवन ।

रूप, गुन, लावन्य, प्रभुता, प्रेम पूरन भवन ॥
विपति जनकी भानवेकों, तुम विना कहु कवन ।
हरहु मनकी मलिनता, ब्यापै न माया पवन ॥
विषय रस इंद्री अजीरन अति करावहु ववन ।
खोलिये हियके नयन, दरसै सुखद बन अवन ।
चतुर, चिंतामनि, दयानिधि, दुसह दारिद दवन ।
मेटिये भगवत ब्यथा, हँसि भेंटिये तजि मवन ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding II

नारायण स्वामी

(८९) आसावरी

सखि, मेरे मनकी को जानै।
कासों कहौं सुनै जो चित दै, हितकी बात बखानै ॥
ऐसो को है अंतरजामी, तुरत पीर पहिचानै।
नारायन जो बीत रही है, कब कोई सच मानै ॥

(९०) सोरठ

जाहि लगन लगी घनस्यामकी।
धरत कहूँ पग, परत हैं कितहूँ,
भूल जाय सुधि धामकी ॥ १ ॥
छबि निहार नहिं रहत सार कछु,
घरि पल निसिदिन जामकी।
जित मुँह उठै तितै ही धावै,
सुरति न छाया घामकी ॥ २ ॥
अस्तुति निन्दा करौ भलै ही,
मेंड़ तजी कुल गामकी।
नारायन बौरी भई डोलै,
रही न काहू कामकी ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

(९१)

मोहन बसि गयो मेरे मनमें ।

लोक-लाज कुल-कानि छूटि गई, याकी नेह-लगनमें ॥
जित देखों तितही वह दीखे, घर-बाहर, आँगनमें ।
अंग-अंग प्रति रोम-रोममें, छाइ रह्यो तन-मनमें ॥
कुंडल-झलक कपोलन सोहै, बाजूबंद भुजनमें ।
कंकन कलित ललित बनमाला, नूपुर धुनि चरननमें ॥
चपल नैन, भ्रकुटी वर बाँकी, ठाढ़ौ सघन लतनमें ।
नारायन बिन मोल बिकी हौं याकी नैंक हसनमें ॥

(९२)

मनमोहन जाकी दृष्टि परत,
ताकी गति होत है और और ।
न सुहात भवन, तन असन बसन,
बनहीको धावत दौर दौर ॥ १ ॥
नहिं धरत धीर, हिय बरत पीर,
व्याकुल है भटकत ठौर ठौर ।
कब अँसुवन भर नारायन मन,
झाँकत डोलत पौर पौर ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding II

(९३) खमाच

प्रीतम, तू मोहिं प्रान ते प्यारौ ।
जो तोहि देखि हियौ सुख पावत, सो बड़ भागनवारौ ॥
तू जीवनधन सरबस तू ही, तू ही दृगनकौ तारौ ।
जो तोकों पलभर न निहारूँ, दीखत जग अँधियारौ ॥
मोद बढ़ावनके कारन हम, मानिनि रूपहिं धारौ ।
नारायन हम दोउ एक हैं, फूल सुगंध न न्यारौ ॥

(९४) विहाग

करु मन, नंदनँदनको ध्यान ।
यहि अवसर तोहिं फिर न मिलैगौ, मेरौ कह्यौ अब मान ॥
घुँघरवारी अलकैं मुखपै, कुंडल झलकत कान ।
नारायन अलसाने नैना, झूमत रूप निधान ॥

(९५) झँझोटी

स्याम दृगनकी चोट बुरी री ।
यों ज्यों नाम लेति तू वाकौ,
मो घायलपै नौन पुरी री ॥ १ ॥
ना जानौं अब सुध-बुध मेरी,
कौन विपिनमें जाय दुरी री ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding I

नारायन नहिं छूटत सजनी,
जाकी जासों प्रीति जुरी री ॥ २ ।

(९६) कान्हरा

नंदनँदनके ऐसे नैन ।
अति छबि भरे नागके छौना, डरति डसैं करि सैन।
इन सम साबर मंत्र न होई,जादू,जंत्र,तंत्र नहिं कोई।
एक दृष्टिमें मन हरि लेवैं करि देवैं बेचैन।
चितवनमें घायल करि डारैं इनपै कोटि बान लै वारैं
अति पैने, तिरछे हिय कसकैं, स्वास न देवैं लेन।
चंचल चपल मनोहर कारे, खंजन-मान-लजावन हारे
नारायन सुन्दर मतवारे, अनियारे, दुख दैन।

(९७) काफी

या साँवरेसों मैं प्रीति लगाई ।
कुल-कलंकतें नाहिं डरौंगी,अब तौ करौं अपनी मन भाई।
बीच बजार पुकार कहौं मैं चाहे करौ तुम कोटि बुराई
लाज मरजाद मिली औरनकों मृदु मुसकनि मेरे बट आई
बिनु देखे मनमोहन कौ मुख,मोहिलगत त्रिभुवन दुखदाई
नारायन तिनकों सब फीकौ,जिन चाखी यह रूप मिठाई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

(९८)

बेदरदी तोहि दरद न आवै ।
चितवनमें चित बस करि मेरौ, अब काहेंकों आँख चुरावै॥
कबसों परी द्वारपै तेरे, बिन देखे जियरा घबरावै ।
नारायन महबूब साँवरे घायल करि फिर गैल बतावै ॥

(९९) नट

देख सखी नव छैल छबीलौ,
प्रातसमय इततें को आवै ।
कमलसमान बड़े दृग जाके,
स्याम सलौनो मृदु मुसकावै ॥ १ ॥
जाकी सुन्दरता जग बरनत,
मुख-सोभा लखि चंद लजावै ।
नारायन यह किधौं वही है,
जो जसुमतिकौ कुँवर कहावै ॥ २ ॥

(१००) ईमन

मोपै कैसी यह मोहिनी डारी ।
चितचोर छैल गिरिधारी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding II

ग्रहकारजमें जी न लगत है, खानपान लगै खारी।
निपट उदास रहत हौं जबते, सूरत देखि तिहारी।
संगकी सखी देति मोहिं धीरज, बचन कहत हितकारी
एक न लगत कही काहूकी कहति कहति सब हारी।
रही न लाज सकुच गुरु जनकी, तन मन सुरति बिसारी
नारायन मोहिं समुझि बावरी, हँसत सकल नर-नारी

(१०१) कवित्त

चाहै तू योग करि भृकुटीमध्य ध्यान धरि,
चाहै नाम रूप मिथ्या जानिकै निहार लै
निरगुन, निरभय, निराकार ज्योति ब्याप रही,
ऐसो तत्त्वज्ञान निज मनमें तू धार लै
नारायन अपनेकौ आप ही बखान करि,
'मोतें वह भिन्न नहीं' या बिधि पुकार लै
जौलौं तोहि नन्दकौ कुमार नाहिं दृष्टि परयौ,
तौलौं तू भलै बैठि ब्रह्मकों बिचार लै

(१०२) बिहाग

नयनों रे, चित-चोर बतावौ ।
तुमहीं रहत भवन रखवारे, बाँके बीर कहावौ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

तुम्हरे बीच गयौ मन मेरौ, चाहै सौंहैं खाऔ।
अब क्यों रोवत हो दइमारे, कहुँ तौ थाह लगाऔ ॥
घरके भेदी बैठि द्वार पैं, दिनमें घर लुटवावौ।
नारायन मोहि वस्तु न चहिये, लेनेहार दिखावौ ॥

(१०३) लावनी

रूपरसिक, मोहन, मनोज-मन-हरन, सकल-गुन-गरबीले
छैल-छबीले चपललोचन चकोर चित चटकीले ॥टेक॥
रतन-जटित सिर मुकुट लटक रहि सिमट स्याम लट घुँघरारी
बाल बिहारी कन्हैयालाल, चतुर, तेरी बलिहारी ॥
लोलक मोती कान कपोलन झलक बनी निरमल प्यारी।
ज्योति उज्यारी, हमैं हरबार दरस दै गिरिधारी ॥
बिज्जुछटा-सी दंतछटा मुख देखि सरदससि सरमीले।
छैल-छबीले चपललोचन चकोर चित चटकीले ॥
मंद हसन, मृदु वचन तोतले, वय किसोर भोली-भाली।
करत चोचले, अमोलक अधर पीक रच रही लाली ॥
फूल गुलाब चिबुक सुंदरता, रुचिर कंठछबि बनमाली।
कर सरोजमें, बुंद मेहँदी अति अमंद है प्रतिपाली ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

फूलछरी-सी नरम कमर करधनीसब्द हैं तुरसीले।
छैल छबीले, चपललोचन चकोर चित चटकीले॥
झँगुली झीन जरीपट कछनी, स्यामल गात सुहात भले।
चाल निराली, चरन कोमल पंकजके पात भले॥
पग नूपुर झनकार परम उत्तम जसुमतिके तात भले।
संग सखनके, जमुनतट गो-बछरान चरात भले।
ब्रज-जुवतिनकौ प्रेम निरखि कर घर-घर माखन गटकीले
छैल-छबीले, चपललोचन चकोर चित चटकीले।
गावैं बाग बिलास चरित हरि सरद-रैन-रस रास करैं
मुनिजन मोहैं, कृष्ण कंसादिक खल-दल नास करैं।
गिरिधारी महराज सदा श्रीब्रजबृन्दाबन बास करैं
हरिचरित्रकों स्रवन सुन-सुन करि अति अभिलाष करैं।
हाथ जोरि करि करे बीनती 'नारायन' दिल दरदीले
छैल-छबीले चपललोचन चकोर चित चटकीले।

(१०४) कालिंगड़ा

मूरख, छाड़ि वृथा अभिमान ।
औसर बीति चल्यो है तेरौ, दो दिनकौ मेहमान।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

भूप अनेक गये पृथिवीपर, रूप तेज बलवान।
कौन बच्यौ या काल ब्याल तें मिटि गये नाम निसान ॥
धवल धाम, धन, गज, रथ, सेना नारी चंद्र समान।
अंतसमै सबहीकों तजिकै, जाय बसे समसान ॥
तजि सतसंग भ्रमत बिषयनमें, जा बिधि मरकट स्वान।
छिन भरि बैठि न सुमिरन कीन्हों, जासों होय कल्यान॥
रे मन मूढ, अनत जनि भटकै, मेरौ कह्यौ अब मान।
नारायन ब्रजराज कुँवरसों, बेगहि करि पहिचान ॥

(१०१)

टेर सुनों ब्रजराज-दुलारे।
दीन मलीन हीन सब गुनते,
आय परयो हौं द्वार तिहारे ॥टेर॥
काम क्रोध अरु कपट मोह मद,
सो जाने निज प्रीतम प्यारे।
भ्रमत रह्यों सँग इन बिषयनके,
तुव पदकमल न मैं उर धारे ॥ १ ॥
कौन कुकर्म किये नहिं मैंने,
जो गये भूल सो लिये उधारे।
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding II

ऐसी खेप भरी रचि पचिकैं
चकित भये लखिकै बनिजारे ॥ २ ।
अब तौ एक बार कहौ हँसिकै,
आजहिते तुम भये हमारे ।
याहि कृपाते नारायनकी
बेगि लगैगी नाव किनारे ॥ ३ ।

ललितकिशोरी

(१०६) झँझोटी

मन, पछितैहौ भजन बिनु कीने ।
धन-दौलत कछु काम न आवै,
कमल-नयन-गुन चित बिनु दीने ॥ १ ।
देखतकौ यह जगत सँगाती,
तात-मात अपने सुख भीने ।
ललितकिसोरी दुंद मिटै ना,
आनँदकंद बिना हरि चीने ॥ २ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

(१०७) गौरी

मुसाफ़िर, रैन रही थोरी ।
जागु-जागु सुख-नींद त्यागि दै, होत बस्तुकी चोरी ॥
मंजिल दूरि भूरि भवसागर, मान क्रूर मति मोरी ।
ललितकिसोरी हाकिमसों डरु, करै जोर बरजोरी ॥

(१०८) पीलू

अब का सोवै सखि ! जाग जाग ।
रैन बिहात जात रस-बिरियाँ, चोलीके बँद ताग ताग ॥
जोबन उमँग सफल कर बौरी, आन-कान सब त्याग त्याग ।
ललितकिसोरी लूट अनँदवा, पीतमके गर लाग लाग ॥

(१०९)

लटक लटक मनमोहन आवनि ।
झूमि झूमि पग धरत भूमिपर गति मातंग लजावनि ॥
गोखुर-रेनु अंग अँग मंडित उपमा दृग सकुचावनि ।
नव घनपै मनु झीन बदरिया, सोभा-रस बरसावनि ॥
बिगसति मुखलौं कानि दामिनी दसनावलि दमकावनि ।
बीच-बीच घनघोर माधुरी, मधुरी बेनबजावनि ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

मुकतमाल उर लसी छबीली, मनु बग-पाँति सुहावनि ।
बिंदु गुलाल गुपाल-कपोलन, इंद्रबधू छवि छावनि
रुनन झुनन किंकिनि धुनि मानों हंसनि की चुहचावनि ।
बिलुलित अलक धूरि धूसरतन, गमन लोटि भुव आवनि ॥
जँघिया लसनि कनक कछनी पै, पटुका ऐंचि बँधावनि ।
पीतांबर फहरानि मुकुटछवि, नटवर बेस बनावनि ॥
हलनि बुलाक अधर तिरछौंही. बीरी सुरँग रचावनि ।
ललितकिशोरी फूल-झरनियाँ मधुर-मधुर बतरावनि ।

(११०) ईमन

साधो, ऐसिइ आयु सिरानी ।
लगत न लाज लजावत संतन,
करतहिं दंभ छदंभ बिहानी ॥ १ ॥
माला हाथ ललित तुलसी गर,
अँग-अँग भगवत छाप सुहानी ।
बाहिर परम बिराग भजनरत,
अंतर मति पर-जुबति नसानी ॥ २ ॥
मुखसों ग्यान-ध्यान बरनत बहु,
कानन रति नित बिषय कहानी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

ललितकिसोरी कृपा करौ हरि,
हरि संताप सुहृद, सुखदानी ॥ ३ ॥

(१११) बिहाग

लाभ कहा कंचन तन पाये।
भजे न मृदुल कमल-दल-लोचन,
दुख-मोचन हरि हरखि न ध्याये ॥ १ ॥
तन-मन-धन अरपन ना कीन्हों,
प्रान प्रानपति गुननि न गाये।
जोवन, धन, कलधौत-धाम सब,
मिथ्या आयु गँवाय गँवाये ॥ २ ॥
गुरुजन गरब, बिमुख-रँग-राते,
डोलत सुख संपति बिसराये।
ललितकिसोरी मिटै ताप ना,
बिनु दृढ़ चिंतामनि उर लाये ॥ ३ ॥

(११२)

मोहनके अति नैन नुकीले।
निकसे जात पार हियराके, निरखत निपट गँसीले ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

ना जानौं वेभ्रन अनियनकी तीन लोकते न्यारी ।
ज्यों-ज्यों छिदत मिठास हियेमें सुख लागत सुकुमारी ॥
जबसों जमुना कूल बिलोक्यो, सब निसि नींद न आवै ।
उठत मरोर बंक चितवनियाँ, उर उत्पात मचावै ॥
ललितकिसोरी आज मिलै, जहवाँ कुलकानि बिचारौं ।
आग लगै यह लाज निगोड़ी, दृग भरि स्याम निहारौं ॥

(११३) खेमटा

रे निरमोही, छबि दरसाय जा ।
कान चातकी स्याम बिरह घन, मुरली मधुर सुनाय जा ॥
ललितकिसोरी नैन चकोरन, दुति मुखचंद दिखाय जा ।
भयौ चहत यह प्रान बटोही, रूसे पथिक मनाय जा ॥

(११४ ललित

लजीले, सकुचीले, सरसीले, सुरमीलेसे,
कटीले औ कुटीले चटकीले मटकीले हैं ।
रूपके लुभीले, कजरीले उनमीले, बर-
छीले, तिरछीलेसे फँसीले औ गँसीले हैं ॥
ललितकिसोरी झमकीले, गरबीले मानों
अति ही रसीले, चमकीले औ रँगीले हैं ।
छबीले, छकीले, अरु नीलेसे, नसीले आली,
नैना नँदलालके नचीले औ नुकीले हैं ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

(११५) झूलना

दुनियाके परपंचोंमें हम मजा नहीं कछु पाया जी ।
भाई-बंधु, पिता-माता, पति सबसों चित अकुलाया जी ॥
छोड़-छाड़ घर, गाँव-नाँव कुल, यही पंथ मन भाया जी ।
ललितकिसोरी आनँदघन सों अब हठि नेह लगाया जी ॥
क्या करना है संतति-संपति, मिथ्या सब जग माया है ।
शाल-दुशाले, हीरा-मोतीमें मन क्यों भरमाया है ॥
माता-पिता, पती-बंधु सब गोरखधंध बनाया है ।
ललितकिसोरी आनँदघन हरि हिरदै कमल बसाया है ॥
बन-बन फिरना बिहतर हमको रतन भवन नहिं भावै है ।
लतातरे पड़ रहनेमें सुख नाहिंन सेज सुहावै है ॥
सोना कर धरि सीस भला अति तकिया ख्याल न आवै है ।
ललितकिसोरी नाम हरीका जपि-जपि मन सचुपावै है ॥
तजि दीनीं जब दुनियाँ-दौलत फिर कोईके घर जाना क्या ।
कंद मूल-फल पाय रहैं अब खट्टा-मीठा खाना क्या ॥
छिनमें साही बकसैं हमको मोतीमाल खजाना क्या ।
ललितकिसोरी रूप हमारा जानै ना तहँ आना क्या ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

अष्टसिद्धि नवनिद्धि हमारी मुट्ठीमें हरदम रहतीं ।
नहीं जवाहिर, सोना-चाँदी, त्रिभुवनकी संपति चहतीं ॥
भावै ना दुनियाकी बातैं दिलवरकी चरचा रहती ।
ललितकिसोरी पार लगावैं मायाकी सरिता बहती ॥
गौर-स्याम बदनारबिंदपर जिसको बीर मचलते देखा ।
नैन बान, मुसक्यान संग फँस फिर नहिं नेक सँभलते देखा
ललितकिसोरी जुगुल इश्कमें बहुतोंका घर घलते देखा ।
डूबा प्रेमसिंधुका कोई हमने नहीं उछलते देखा ॥
देखौ री, यह नंदका छोरा बरछी मारे जाता है ।
बरछी-सी तिरछी चितवनकी पैनी छुरी चलाता है ॥
हमको घायल देख बेदरदी मंद-मंद मुसकाता है ।
ललितकिसोरी जखम जिगरपर नौनपुरी बुरकाता है ॥

(११६) सारंग

मुरकि मुरकि चितवनि चित चोरैं ।
ठुमकि चलन हेरि दै बोलनि, पुलकनि नंदकिसोरैं ॥
सहरावनि गैयान चौंकनी, थपकनि कर बनमाली ।
गुहरावनि लै नाम सबनकौ, धौरी धूमर आली ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

चुचकारनि चट झपटि बिचुकनी, हूँ हूँ रहौ रँगीली ।
नियरावनि चोरवनि मगहीमें, झुकि वछियान छबीली ॥
फिरकैयाँ लै निरत अलापन, बिच-बिच तान रसीली ।
चितवनि ठिटुकि उर्चकि गैयासों सीटी भरनि रसीली ॥
चाँपन अधर सैन दै चंचल, नैनन मेंठि कटारी ।
जोरन कर हा हा करि मोहन, मुसकन ऐंठि बिहारी ॥
बाँह उठाय उचकि पग टेरनि, इतै कितै हौ स्यामा ।
निकसी नई आज तै बनहि, मोरे ढिग अभिरामा ॥
हरुवे खोर साँकरी जुबतिन, कहत गुलाम तिहारी ।
मिलियौ रैन मालती कुंजै तहँ पिक अरुन निहारौ ॥
काहू झटक चीर लकुटीतें, काहू पगै दबावै ।
काहू अंग परसि काहू तन, नैनन कोर नचावै ॥
उरझत पट नूपुरसों पाछे झुकि झुकि कै सुरझावै ।
ललितकिसोरी ललित लाड़िली, दृग संकेत बतावै ॥

(११७) खमाच

नैंन चकोर, मुखचंदहूकों वारि डारौं,
वारि डारौं चित्तहिं मनमोहन चितचोरपै ।
प्रानहूकों बारि डारौं हँसन दसन लाल,
हेरन कटिलता और लोचनकी कोरपै ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

वारि डारौं मनहिं सुअंग अंग स्यामा स्याम,
महल मिलाप रस रासकी झकोरपै ।
अतिहि सुघर बर सोहत त्रिभंगीलाल,
सरवस वारौं वा प्रीवाकी मरोरपै ॥

(११८)

अब तौ तेरिय हाथ बिकानी ।
मृदु बोलन मुसक्यान माधुरी, तन मन नैन समानी ॥
लोक-लाज, कुल-कानि तजी सब, जामें तुव रुचि चीनी ।
धरम-करम व्रत नेम सबै सो, तोई रँग रस भीनी ॥
तुव कारन यह भेष बनायो प्रगट उघरि करि नाची ।
नाउँ कुनाउँ धरौ किन कोऊ, हौं नाहिन मति काँची ॥
होनी होय सो होय भले ही, तन मन लगन लगी है ।
ललितकिसोरी लाल तिहारे, मति अनुराग पगी है ॥

(११९) अलहैया

मैं तुव पदतर रेनु रसीली ।
तेरी सरवरि कौन करि सकै, प्रेममई मूरति गरबीली ॥
कोटिहु प्रान वारनें करिकै उरिनि न तोसों प्रीति रँगीली ।
अपनी प्रेम छटा करुना करि दीजै दान दयाल छबीली ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

का मुख करौं बड़ाई राई, ललितकिसोरी केलि हठीली।
प्रीति दसांस सतांस तिहारी, मोमें नाहिन नेह नसीली॥

(१२०) प्रभाती

कमलमुख खोलौ आजु पियारे।
बिगसित कमल कुमोदिनि मुकलित, अलिगन मत्त गुँजारे।
प्राची दिसि रवि थार आरती लिये ठनी निवछारे॥
ललितकिसोरी सुनि यह बानी कुरकुट बिसद पुकारे।
रजनी राज बिदा माँगै बलि निरखौ पलक उघारे॥

(१२१) अलहैया

अब कुलकानि तजे ही बनैगी।
पलक ओट सत कोटि कलप सम,
बिछुरत हिये कटारि हनैगी॥ १॥
ललितकिसोरी अंत एक दिन,
तजिबेई जब तान तनैगी।
फिर का सोच देहु तिल अंजुलि,
लेहु अंक रसकेलि छनैगी॥ २॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

भजन-संग्रह

दूसरा भाग (दूसरा खण्ड)

दादूदयाल

(१२२) गौरी

मेरे मन भैया राम कहौ रे ॥टेक॥
रामनाम मोहिं सहजि सुनावै ।
उनहिं चरन मन कीन रहौ रे ॥ १ ॥
रामनाम ले संत सुहावै ।
कोई कहै सब सीस सहौ रे ॥ २ ॥
वाहीसों मन जोरे राखौ ।
नीकै रासि लिये निबहौ रे ॥ ३ ॥
कहत सुनत तेरौ कछू न जावे ।
पाप निछेदन सोई लहौ रे ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

दादू जन हरि-गुण गाओ।
कालहि जालहि फेरि दहौ रे ॥ ५ ॥

(१२३)

बिरहणिकौं सिंगार न भावै।
है कोइ ऐसा राम मिळावै ॥टेक॥
बिसरे अंजन-मंजन, चीरा।
बिरह-बिथा यह ब्यापै पीरा ॥ १ ॥
नौ-सत थाके सकल सिंगारा।
है कोइ पीड़ मिटावनहारा ॥ २ ॥
देह-गेह नहिं सुद्धि सरीरा।
निसदिन चितवत चातक नीरा ॥ ३ ॥
दादू ताहि न भावत आना।
राम बिना भई मृतक समाना ॥ ४ ॥

(१२४)

तौलगि जिनि मारै तूँ मोहिं।
जौलगि मैं देखौं नहिं तोहिं ॥टेक॥
इबके बिछुरे मिलन कैसे होइ।
इहि बिधि बहुरि न चीन्है कोइ ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

दीनदयाल दया करि जोइ ।
सब सुख-आनँद तुम सूँ होइ ॥ २ ॥
जनम-जनमके बन्धन खोइ ।
देखण दादू अहि निशि रोइ ॥ ३ ॥

(१२५)

संग न छाँड़ौं मेरा पावन पीव ।
मैं बलि तेरे जीवन जीव ॥टेक॥
संगि तुम्हारे सब सुख होइ ।
चरण-कँवलमुख देखौं तोहि ॥ १ ॥
अनेक जतन करि पाया सोइ ।
देखौं नैनौं तौ सुख होइ ॥ २ ॥
सरण तुम्हारी अंतरि वास ।
चरण-कँवल तहँ देहु निवास ॥ ३ ॥
अब दादू मन अनत न जाइ ।
अंतर बेधि रह्यौ लौ लाइ ॥ ४ ॥

(१२६)

ऐसा राम हमारे आवै ।
वार पार कोइ अंत न पावै ॥टेक॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

हलका भारी कहया न जाइ ।
मोल-माप नाहिं रह्या समाइ ॥ १ ॥
कीमत लेखा नहिं परिमाण ।
सब पचि हारे साध सुजाण ॥ २ ॥
आगौ पीछौ परिमित नाहीं ।
केते पारिख आवहिं जाहीं ॥ ३ ॥
आदि-अंत-मधि लखै न कोइ ।
दादू देखे अचरज होइ ॥ ४ ॥

(१२७)

राम रस मीठा रे, कोइ पीवै साधु सुजाण ।
सदा रस पीवै प्रेमसूँ, सो अबिनासी प्राण ॥ टेक ॥
इहि रस मुनि लागे सबै, ब्रह्मा-बिसुन-महेस ।
सुर नर साधू संत जन, सो रस पीवै सेस ॥ १ ॥
सिध साधक जोगी-जती, सती सबै सुखदेव ।
पीवत अंत न आवई, ऐसा अलख अभेव ॥ २ ॥
इहि रस राते नामदेव, पीपा अरु रैदास ।
पिवत कबीरा नाथक्या, अजहूँ प्रेम पियास ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

यह रस मीठा जिन पिया, सो रस ही माँहिं समाइ।
मीठे मीठा मिलि रह्या, दादू अनत न जाइ ॥४॥

(१२८)

सोई सुहागनि साँच सिँगार।
तन-मन लाइ भजै भरतार ॥ टेक ॥
भाव-भगत प्रेम-लौ लावै।
नारी सोई सुख पावै ॥ १ ॥
सहज सँतोष सील जब आया।
तब नारी नाह अमोलिक पाया ॥ २ ॥
तन मन जोबन सौंपि सब दीन्हा।
तब कंत रिझाइ आप बस कीन्हा ॥ ३ ॥
दादू बहुरि बियोग न होई।
पिवसूँ प्रीति सुहागनि सोई ॥ ४ ॥

(१२९)

तब हम एक भये रे भाई।
मोहन मिल साँची मति आई ॥टेक॥
पारस परस भये सुखदाई।
तब दुनिया दुरमत दूरि गमाई ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

मलयागिरि मरम मिलि पाया।
तब बंस बरण-कुल भरम गँवाया ॥ २ ॥
हरिजल नीर निकट जब आया।
तब बूँद-बूँद मिल सहज समाया ॥ ३ ॥
नाना भेद भरम सब भागा।
तब दादू एक रंगै रँग लागा ॥ ४ ॥

(१३०)

इत है नीर नहावन जोग।
अनतहि भरम भूला रे लोग ॥टेक॥
तिहि तटि न्हाये निर्मल होइ।
बस्तु अगोचर लखै रे सोइ ॥ १ ॥
सुघट घाट अरु तिरिबौ तीर।
बैठे तहाँ जगत-गुर पीर ॥ २ ॥
दादू न जाणै तिनका भेव।
आप लखावै अंतर देव ॥ ३ ॥

(१३१) माली गौड़ी

मेरा मेरा छोड़ गँवारा,
सिरपर तेरे सिरजनहारा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

अपने जीव बिचारत नाहीं,
क्या ले गइला बंस तुम्हारा ॥ टेक ॥
तब मेरा कत करता नाहीं,
आवत है हंकारा ।
काल-चक्रसूँ खरी परी रे,
बिसर गया घर-बारा ॥ १ ॥
जाइ तहाँका संयम कीजै,
बिकट पंथ गिरधारा ।
दादू रे तन अपना नाहीं,
तौ कैसे भयो सँसारा ॥ २ ॥

(१३२) कल्यान

जगसूँ कहा हमारा । जब देख्या नूर तुम्हारा ॥ टेक ॥
परम तेज घर मेरा । सुख-सागर माहिं बसेरा ॥ १ ॥
झिलिमिलि अति आनंदा । पाया परमानंदा ॥ २ ॥
जोति अपार अनंता । खेलैं फाग बसंता ॥ ३ ॥
आदि अंत असथाना । दादू सो पहिचाना ॥ ४ ॥

(१३३) कान्हड़ा

आव पियारे मीत हमारे ।
निस-दिन देखूँ पाँव तुम्हारे ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK
सेज हमारी पीव सँवारी।
दासि तुम्हारी सो धन वारी ॥ १ ॥
जे तुझ पाऊँ अंग लगाऊँ।
क्यूँ समझाऊँ वारण जाऊँ ॥ २ ॥
पंथ निहारूँ बाट सँवारूँ।
दादू तारूँ तन मन वारूँ ॥ ३ ॥

(१३४) केदारा

अरे मेरा अमर उपावणहार रे।
खालिक आशिक तेरा ॥ टेक ॥
तुमसूँ राता तुमसूँ माता।
तुमसूँ लागा रंग रे खालिक ॥ १ ॥
तुमसूँ खेला तुमसूँ मेला।
तुमसूँ प्रेम-सनेह रे खालिक ॥ २ ॥
तुमसूँ लैणा तुमसूँ दैणा।
तुमहीसूँ रत होइ रे खालिक ॥ ३ ॥
खालिक मेरा आशिक तेरा।
दादू अनत न जाइ रे खालिक ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

(१३५)

बटाऊ रे चलना आज कि काल ।
समझ न देखै कहा सुख सोवै.
रे मन राम सँभाल ॥ टेक ॥
जैसैं तरवर बिरख बसेरा,
पंखी वैठे आइ ।
ऐसैं यह सब हाट पसारा,
आप आप कूँ जाइ ॥ १ ॥
कोइ नहिं तेरा सजन सँगाती,
जिनि खोवै मन मूल ।
यह संसार देखि मत भूलै,
सबही सेंबल फूल ॥ २ ॥
तन नहिं तेरा, धन नहिं तेरा.
कहा रह्यो इहिं लागि ।
दादू हरि बिन क्यूँ सुख सोवै,
काहे न देखै जागि ॥ ३ ॥

(१३६)

कोइ जानै रे मरम माधइया केरौ ।
कैसैं रहै करै का सजनी प्राण मेरौ ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

कौण बिनोद करत री सजनी, कौणनि संग बसेरौ ।
संत साध गति आये उनके करत जु प्रेम घनेरौ॥ १ ॥
कहाँ निवास बास कहँ, सजनी गवन तेरौ ।
घट-घट माहैं रहै निरंतर, ये दादू नेरौ ॥ २ ॥

(१३७) मारू

क्यों बिसरै मेरा पीव पियारा ।
जीवकी जीवन प्राण हमारा ॥टेक ॥
क्यौंकर जीवै मीन जल बिछुरें,
तुम बिन प्राण सनेही ।
चिंतामणि जब करतैं छूटै,
तब दुख पावै देही ॥ १ ॥
माता बालक दूध न देवै,
सो कैसैं करि पीवै ।
निरधन का धन अनत भुलाना,
सो कैसे करि जीवै ॥ २ ॥
बरखहु राम सदा सुख अमरित,
नीझर निरमल धारा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

प्रेम पियाला भर भर दीजै,
दादू दास तुम्हारा ॥ ३ ॥

(१३८)

कबहूँ ऐसा बिरह उपावै रे ।
पिव बिन देखैं जीव जावै रे ॥ टेक ॥
बिपत हमारी सुनौ सहेली ।
पिव बिन चैन न आवै रे ॥
ज्यों जल मीन भीन तन तलफै ।
पिव बिन बज्र बिहावै रे ॥ १ ॥
ऐसी प्रीति प्रेमको लागै ।
ज्यों पंखी पीव सुनावै रे ॥
त्यों मन मेरा रहै निसबासुर ।
कोइ पीवकूँ आणि मिलावै रे ॥ २ ॥
तौ मन मेरा धीरज धरई ।
कोइ आगम आणि जणावै रे ॥
तौ सुख जीव दादूका पावै ।
पल पिवजी आप दिखावै रे ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

(१३९)

जागि रे सब रैंण बिहाण ।
जाइ जनम अँजुलीको पाणी ॥टेक॥
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै ।
जे दिन जाइ सो बहुरि न आवै ॥ १ ॥
सूरज-चंद कहैं समुझाइ ।
दिन-दिन आव घटती जाइ ॥ २ ॥
सरवर-पाणी तरवर-छाया ।
निसदिन काल गरासै काया ॥ ३ ॥
हंस बटाऊ प्राण पयाना ।
दादू आतम राम न जाना ॥ ४ ॥

(१४०) रामकली

अहो नर नीका है हरिनाम ।
दूजा नहीं नाँउ बिन नीका, कहिले केवल राम ॥टेक॥
निरमल सदा एक अविनासी, अजर अकल रस ऐसा ।
दृढ़ गहि राखि मूल मन माहीं, निरख देखि निज कैसा ॥
यह रस मीठा महा अमीरस, अमर अनूपम पीवै ।
राता रहै प्रेमसूँ माता, ऐसैं जुगि जुगि जीवै ॥

Kamikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

दूजा नहीं और को ऐसा, गुर अंजन करि बूझै ।
दादू मोटे भाग हमारे, दास बमेकी बूझै ॥ ३ ॥

(१४१)

पंडित राम मिलै सो कीजै ।
पढ़ि-पढ़ि वेद पुराण बखाने,
सोई तत कहि दीजै ॥टेक॥
आतम रोगी बिषय बियाधी,
सोइ करि औषध सारा ।
परसत प्राणी होइ परम सुख,
छूटै सब संसारा ॥ १ ॥
ये गुण इंद्री अगिनि अपारा
तासन जलै सरीरा ।
तन मन सीतल होइ सदा सुख,
सो जल नावौ नीरा ॥ २ ॥
सोई मारग हमहिं बतावौ,
जिहि पँथ पहुँचै पारा ।
भूल न परै उलट नहिं आवै,
सो कुछ करहु बिचारा ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

गुर उपदेस देहु कर दीपक,
तिमर मिटै सब सूझै।
दादू सोई पंडित ग्याता,
राम-मिलनकी बूझै॥ ४॥

(१४२) आसावरी

तूँ ही मेरे रसना तूँ ही मेरे बैना।
तूँ ही मेरे स्रवना तूँ ही मेरे नैना ॥टेक॥
तूँ ही मेरे आतम कँवल मँझारी।
तूँ हीं मेरे मनसा तुम्ह परिवारी॥ १॥
तूँ हीं मेरे मनहीं तूँ हीं मेरे साँसा।
तूँ हीं मेरे सुरतैं प्राण निवासा॥ २॥
तूँ हीं मेरे नख-सिख सकल सरीरा।
तूँ हीं मेरे जिय रे ज्यूँ जलनीरा॥ ३॥
तुम्ह बिन मेरे और कोइ नाहीं।
तूँ हीं मेरी जीवनि दादू माँहीं॥ ४॥

(१४३)

बाबा नाहीं दूजा कोई।
एक अनेकन नाँव तुम्हारे, मो पैं और न होई ॥टेक॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

अलख इलाही एक तूँ तूँहीं राम रहीम ।
तूँ हीं मालिक मोहना, कैसो नाँउ करीम ॥ १ ॥
साँई सिरजनहार तूँ, तूँ पावन तूँ पाक ।
तूँ काइम करतार तूँ, तूँ हरि हाजिर आप ॥ २ ॥
रमिता राजिक एक तूँ, तूँ सारँग सुबहान ।
कादिर करता एक तूँ, तूँ साहिब सुलतान ॥ ३ ॥
अविगत अल्लह एक तूँ, गनी गुसाईं एक ।
अजब अनूपम आप है, दादू नाँव अनेक ॥ ४ ॥

(१४४) देवगंधार

मन मूरिखा तैं यौंहीं जनम गँवायौ ।
साँईंकेरी सेवा न कीन्हीं,
इहि कलि काहेकूँ आयौ ॥टेक॥
जिन बातन तेरौ छूटिक नाहीं,
सोई मन तेरौ भायौ ।
कामी ह्वै बिषयासँग लाग्यो
रोम रोम लपटायौ ॥ १ ॥
कुछ इक चेति बिचारी देखौ,
कहा पाप जिय लायौ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

दादूदास भजन करि लीजै,
सुपिने जग डहकायौ ॥ २ ॥

(१४५) परज

नूर रह्या भरपूर, अमीरस पीजिये ।
रस मोहैं रस होइ, लाहा लीजिये ॥टेक॥
परगट तेज अनंत, पार नहिं पाइये ।
झिलिमिलि झिलिमिलि होइ, तहाँ मन लाइये ॥ १ ॥
सहजैं सदा प्रकास, ज्योति जल पूरिया ।
तहाँ रहै निज दास, सेवग सूरिया ॥ २ ॥
सुख-सागर वार न पार, हमारा बास है ।
हंस रहैं ता माहिं, दादू दास है ॥ ३ ॥

(१४६) टोड़ी

तू साँचा साहिब मेरा ।
करम करीम कृपाल निहारौ, मैं जन बंदा तेरा ॥टेक॥
तुम दीवान सबहिनकी जानौं, दीनानाथ दयाला ।
दिखाइ दीदार मौजबंदेकूँ, काइम करौ निहाला ॥
मालिक सबै मुल्किके साँइ, समरथ सिरजनहारा ।
खैर खुदाइ खल्कमें खेलत, दे दीदार तुम्हारा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

मैं सिकस्ता दरगह तेरी हरि हजूर तूँ कहिये ।
दादू द्वारै दीन पुकारै, काहे न दरसन लहिये ॥

(१४७) बिलावल

सोई साध-सिरोमणि, गोविंद गुण गावै ।
राम भजै बिषिया तजै, आपा न जनावै ॥ टेक ॥
मिथ्या मुख बोलै नहीं, पर-निंदा नाहीं ।
औगुण छोड़ै गुण गहै, मन हरिपद-माहीं ॥ १ ॥
निरबैरी सब आतमा, पर आतम जानै ।
सुखदाई समता गहै, आपा नहिं आनै ॥ २ ॥
आपा पर अंतर नहीं, निरमल निज सारा ।
सतबादी साचा कहै, लै लीन बिचारा ॥ ३ ॥
निरभै भज न्यारा रहै, काहू लिपत न होई ।
दादू सब संसारमें, ऐसा जन कोई ॥ ४ ॥

(१४८) गौरी

हिंदू तुरक न जाणौं दोइ ।
साँईं सबका सोई है रे,
और न दूजा देखौं कोइ ॥टेक॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

कीट-पतंग सबै जोनिनमें,
जल-थल संगि समाना सोइ ।
पीर पैगम्बर देव-दानव,
मीर-मलिक मुनि-जनकौं मोहि ॥ १ ॥
करता है रे सोई चीन्हौं,
जिन वै क्रोध करै रे कोइ ।
जैसैं आरसी मंजन कीजै,
राम-रहीम देही तन धोइ ॥ २ ॥
साँईंकेरी सेवा कीजै
पायौ धन काहेकौं खोइ ।
दादू रे जन हरि भज लीजै,
जनम-जनम जे सुरजन होइ ॥ ३ ॥

रैदास

(१४९)

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ ।
गावनहार को निकट बताऊँ ॥टेक॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

जबलग है या तनकी आसा,
तबलग करै पुकारा ।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तनकी,
तब को गावनहारा ॥ १ ॥
जबलग नदी न समुद समावै,
तबलग बढ़ै हँकारा ।
जब मन मिल्यो राम-सागरसों,
तब यह मिटी पुकारा ॥ २ ॥
जबलग भगति मुकतिकी आसा,
परम तत्त्व सुनि गावै ।
जहँ-जहँ आस धरत है यह मन,
तहँ-तहँ कछू न पावै ॥ ३ ॥
छाड़ै आस निरास परमपद,
तब सुख सति कर होई ।
कह रैदास जासों और करत है,
परम तत्त्व अब सोई ॥ ४ ॥

(१५०)

ऐसो कछु अनुभव कहत न आवै ।
साहिब मिलै तो को बिलगावै ॥टेक॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

सबमें हरि है हरिमें सब है,
हरि अपनो जिन जाना ।
साखी नहीं और कोइ दूसर,
जाननहार सयाना ॥ १ ॥
बाजीगरसों राचि रहा,
बाजीका मरम न जाना ।
बाजी झूठ साँच बाजीगर,
जाना मन पतियाना ॥ २ ॥
मन थिर होइ तो कोइ न सूझै,
जानै जाननहारा ।
कह रैदास बिमल बिवेक सुख,
सहज सरूप संभारा ॥ ३ ॥

(१५१)

जब रामनाम कहि गावैगा,
तब भेद अभेद समावैगा ॥टेक॥
जे सुख हैं या रसके परसे,
सो सुख का कहि गावैगा ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

गुरु परसाद भई अनुभौ मति,
विस अमरित सम धावैंगा ॥ २ ॥
कह रैदास मेटि आपा-पर,
तब वा ठौरहि पावैंगा ॥ ३ ॥

(१५२)

रामा हो जगजीवन मोरा ।
तूँ न बिसारि राम मैं जन तोरा ॥ टेक ॥
संकट सोच पोच दिनराती ।
करम कठिन मोरि जाति कुजाती ॥ १ ॥
हरहु बिपति भावै करहु सो भाव ।
चरण न छाड़ौं जाव सो जाव ॥ २ ॥
कह रैदास कछु देहु अलंबन ।
बेगि मिलौ जनि करो विलंबन ॥ ३ ॥

(१५३)

अब हम खूब वतन घर पाया ।
ऊँचा खेड़ा सदा मेरे भाया ॥ टेक ॥
बेगमपूर सहरका नाम ।
फिकर अँदेश नहीं तेहि ग्राम ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

नहिं जहाँ साँसत लानत मार ।
हैफन खता न तरस जवाल ॥ २ ॥
आव न जान रहम औजूद ।
जहाँ गनी आप बसै मादूद ॥ ३ ॥
जोई सैलि करै सोई भावै ।
मरहम महलमें को अटकावै ॥ ४ ॥
कह रैदास खलास चमारा ।
जो उस सहर सो मीत हमारा ॥ ५ ॥

(१५४)

राम मैं पूजा कहा चढ़ाऊँ ।
फल अरु फूल अनूप न पाऊँ ॥टेक॥
थन तर दूध जो बछरू जुठारी ।
पुहुप भँवर जल मीन बिगारी ॥ १ ॥
मलयागिर बेधियो भुअंगा ।
विष अमृत दोउ एकै संगा ॥ २ ॥
मन ही पूजा मन ही धूप ।
मन ही सेऊँ सहज सरूप ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

पूजा अरचा न जानूँ तेरी।
कह रैदास कवन गति मोरी ॥ ४ ॥

(१५५)

देहु कलाली एक पियाला।
ऐसा अवधू है मतवाला ॥ टेक ॥
हे रे कलाली तैं क्या किया!
सिरका-सा तैं प्याला दिया ॥ १ ॥
कहैं कलाली प्याला देऊँ।
पीवनहारेका सिर लेऊँ ॥ २ ॥
चंद-सूर दोउ सनमुख होई।
पीवै प्याला मरै न कोई ॥ ३ ॥
सहज सुन्नमें भाठी सखे।
पावै रैदास गुरुमुख दखे ॥ ४ ॥

(१५६)

पार गया चाहै सब कोई।
रहि उर वार पार नहिं होई ॥ टेक ॥
पार कहै उर वारसे पारा।
बिन पद-परचे भ्रमै गँवारा ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

पार परम पद मंझ मुरारी।
तामें आप रमै बनवारी ॥ २ ॥
पूरन ब्रह्म बसै सब ठाईं।
कह रैदास मिलै सुख साईं ॥ ३ ॥

(१५७)

यह अंदेस सोच जिय मेरे।
निसिबासर गुन गाऊँ तेरे ॥ टेक॥
तुम चिंतित मेरी चिंतहु जाई।
तुम चिंतामनि हौ इक नाई ॥ १ ॥
भगत-हेत का का नहिं कीन्हा।
हमरी बेर भये बलहीना ॥ २ ॥
कह रैदास दास अपराधी।
जेहि तुम द्रवौ सो भगति न साधी ॥ ३ ॥

(१५८)

जो तुम तोरौ राम मैं नाहि तोरौं।
तुमसे तोरि कवनसे जोरौं ॥ टेक ॥
तीरथ बरत न करौं अंदेसा।
तुम्हरे चरन कमल क भरोसा ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

जहँ जहँ जाओं तुम्हरी पूजा।
तुमसा देव और नहिं दूजा ॥ २ ॥
मैं अपनो मन हरिसों जोरयों।
हरिसों जोरि सबन सों तोरयों ॥ ३ ॥
सबही पहर तुम्हारी आसा।
मन क्रम बचन कहै रैदासा ॥ ४ ॥

(१५९)

सो कहा जानै पीर पराई।
जाके दिलमें दरद न आई ॥ टेक॥
दुखी दुहागिनि होइ पियहीना,
नेह निरति करि सेव न कीना।
स्याम-प्रेमका पंथ दुहेला,
चलन अकेला कोई संग न हेला ॥ १ ॥
सुखकी सार सुहागिनि जानै,
तन-मन देय अंतर नहिं आनै।
आन सुनाय और नहिं भाषै,
राम रसायन रसना चाखै ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

खालिक तो दरमंद जगाया,
बहुत उमेद जबाब न पाया।
कह रैदास कवन गति मेरी,
सेवा बंदगी न जानूँ तेरी ॥ ३ ॥

(१६०) गौड़

आज दिवस लेऊँ बलिहारा।
मेरे घर आया रामका प्यारा ॥ टेक ॥
आँगन बँगला भवन भयो पावन।
हरिजन बैठे हरिजस गावन ॥ १ ॥
करूँ डंडवत चरन पखारूँ।
तन-मन-धन उन ऊपरि वारूँ ॥ २ ॥
कथा कहैं अरु अरथ विचारैं।
आप तरैं औरन को तारैं ॥ ३ ॥
कह रैदास मिलैं निज दासा।
जनम जनमकै काटैं पासा ॥ ४ ॥

(१६१)

कवन भगतिते रहै प्यारो पाहुनो रे।
घर घर देखों मैं अजब अभावनो रे ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

मैला मैला कपड़ा केता एक धोऊँ ।
आवै आवै नींदहि कहाँलों सोऊँ ॥ १ ॥
ज्यों ज्यों जोड़ै त्यों त्यों फाटै ।
झूठै सबनि जरै उड़ि गये हाटै ॥ २ ॥
कह रैदास परो जब लेख्यो ।
जोई जोई कियो रे सोई सोई देख्यौ ॥ ३ ॥

(१६२)

अब कैसे छुटै नाम रट लागी ॥ टेक ॥
प्रभुजी, तुम चन्दन, हम पानी ।
जाकी अँग अँग बास समानी ॥ १ ॥
प्रभुजी, तुम घन बन, हम मोरा ।
जैसे चितवन चंद चकोरा ॥ २ ॥
प्रभुजी, तुम दीपक, हम बाती ।
जाकी जोति बरै दिन राती ॥ ३ ॥
प्रभुजी, तुम मोती, हम धागा ।
जैसे सोनहि मिलत सुहागा ॥ ४ ॥
प्रभुजी, तुम स्वामी, हम दासा ।
ऐसी भगति करै रैदासा ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

मलूकदास

(१६३)

हरि समान दाता कोउ नाहीं ।
सदा बिराजैं संतनमाहीं ॥ १ ॥
नाम बिसंभर बिस्व जिआवैं ।
साँझ बिहान रिजिक पहुँचावैं ॥ २ ॥
देइ अनेकन मुखपर ऐने ।
औगुन करैं सो गुन करि मानैं ॥ ३ ॥
काहू भाँति अजार न देई ।
जाही को अपना कर लेई ॥ ४ ॥
घरी घरी देता दीदार ।
जन अपनेका खिजमतगार ॥ ५ ॥
तीन लोक जाके औसाफ ।
जनका गुनह करैं सब माफ ॥ ६ ॥
गरुवा ठाकुर है रघुराई ।
कहैं मलूक क्या करूँ बड़ाई ॥ ७ ॥

(१६४)

सदा सोहागिन नारि सो, जाके राम भतारा ।
मुख माँगे सुख देत हैं, जगजीवन प्यारा ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

कबहुँ न चढ़ै रँडपुरा, जाने सब कोई ।
अजर अमर अबिनासिया, ताकौ नास न होई ॥ २ ॥
नर-देही दिन दोयकी, सुन गुरुजन मेरी ।
क्या ऐसोंका नेहरा, मुए बिपति घनेरी ॥ ३ ॥
ना उपजै ना बीनसै, संतन सुखदाई ।
कहैं मलूक यह जानिकै, मैं प्रीति लगाई ॥ ४ ॥

(१६५)

अब तेरी सरन आयो राम ॥ १ ॥
जबै सुनियो साधके मुख, पतित पावन नाम ॥ २ ॥
यही जान पुकार कीन्ही अति सतायो काम ॥ ३ ॥
बिषयसेती भयो आजिज कह मलूक गुलाम ॥ ४ ॥

(१६६)

साँचा तू गोपाल, साँच तेरा नाम है ।
जहवाँ सुमिरन होय, धन्य सो ठाम है ॥ १ ॥
साँचा तेरा भगत, जो तुझको जानता ।
तीन लोकको राज, मनै नहिं आनता ॥ २ ॥
झूठा नाता छोड़ि, तुझे लव लाइया ।
सुमिरि तिहारो नाम, परम पद पाइया ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

जिन यह लाहा पायो, यह जग आय कै ।
उतरि गयो भवपार, तेरो गुन गाइ कै ॥ ४ ॥
तुही मातु तुही पिता, तुही हित बन्धु है ।
कहत मलूका दास, बिना तुझ धुंध है ॥ ५ ॥

(१६७)

कौन मिलावै जोगिया हो,
जोगिया बिन रह्यो न जाय ॥टेक॥
मैं जो प्यासी पीवकी,
रटत फिरौं पिउ पीव ।
जो जोगिया नहिं मिलिहैं हो,
तो तुरत निकासूँ जीव ॥ १ ॥
गुरुजी अहेरी मैं हिरनी,
गुरु मारैं प्रेमका बान ।
जेहि लागै सोई जानई हो,
और दरद नहिं जान ॥ २ ॥
कहैं मलूक सुनु जोगिनी रे,
तनहिमें मनहिं समाय ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

तेरे प्रेमके कारने जोगी
सहज मिला मोहिं आय ॥ ३ ॥

(१६८)

तेरा मैं दीदार-दीवाना ।
घड़ी घड़ी तुझे देखा चाहूँ, सुन साहेब रहमाना ॥
हुआ अलमस्त खबर नहिं तनकी, पीया प्रेम-पियाला ।
ठाढ़ होऊँ तो गिरगिर परता, तेरे रँग मतवाला ॥
खड़ा रहूँ दरबार तुम्हारे, ज्यों घरका बंदाजादा ।
नेकीकी कुलाह सिर दिये, गले पैरहन साजा ॥
तौजी और निमाज न जानूँ ना जानूँ धरि रोजा ।
बाँग जिकर तबहीसे बिसरी, जबसे यह दिल खोजा ॥
कह मलूक अब कजा न करिहौं दिलहीसों दिल लाया ।
मक्का हज्ज हियेमें देखा, पूरा मुरसिद पाया ॥

(१६९)

दरद-दिवाने बावरे, अलमस्त फकीरा ।
एक अकीदा लै रहे, ऐसे मन धीरा ॥ १ ॥
प्रेमी पियाला पीवते, बिसरे सब साथी ।
आठ पहर यों झूमते, ज्यों माता हाथी ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

उनकी नजर न आवते, कोइ राजा रंक ।
बंधन तोड़े मोहके, फिरते निहसंक ॥ ३ ॥
साहेब मिल साहेब भये, कछु रही न तमाई ।
कहैं मलूक तिस घर गये, जहँ पवन न जाई ॥ ४ ॥

(१७०)

हमसे जनि लागै तू माया ।
थोरेसे फिर बहुत होयगी, सुनि पैहैं रघुराया ॥ १ ॥
अपनेमें है साहेब हमारा, अजहूँ चेतु दिवानी ।
काहू जनके बस परि जैहो, भरत मरहुगी पानी ॥ २ ॥
तरहै चितै लाज करु जनकी, डारु हाथकी फाँसी ।
जनतें तेरो जोर न लहिहै, रच्छपाल अविनासी ॥ ३ ॥
कहै मलूका चुप करु ठगनी, औगुन राखु दुराई ।
जो जन उबरैं राम नाम कहि, तातें कछु न बसाई ॥ ४ ॥

(१७१)

नाम हमारा खाक है, हम खाकी बन्दे ।
खाकही ते पैदा किये, अति गाफ़िल गन्दे ॥ १ ॥
कबहुँ न करते बंदगी, दुनियामें भूले ।
आसमानको ताकते, घोड़े चढ़ि फूले ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

जोरू-लड़के खुस किये, साहेब बिसराया ।
राह नेकीकी छोड़िके, बुरा अमल कमाया ॥ ३ ॥
हरदम तिसको यादकर, जिन वजूद सँवारा ।
सबै खाक दर खाक है, कुछ समुझ गँवारा ॥ ४ ॥
हाथी घोड़े खाकके, खाक खानखानी ।
कहैं मलूक रहि जायगा, औसाफ निसानी ॥ ५ ॥

(१७२)

ऐ अजीज ईमान तू, काहेको खोवै ।
हिय राखै दरगाहमें, तो प्यारा होवै ॥ १ ॥
यह दुनिया नाचीजके, जो आसिक होवै ।
भूलै जात खोदायको सिर धुनि-धुनि रोवै ॥ २ ॥
इस दुनिया नाचीजके, तालिब हैं कुत्ते ।
लज्जतमें मोहित हुए, दुख सहे बहूते ॥ ३ ॥
जबलगि अपने आपको, तहकीक न जानै ।
दास मलूका रब्बको, क्योंकर पहिचानै ॥ ४ ॥

(१७३)

गरब न कीजे बावरे, हरि गरब प्रहारी ।
गरबहितें रावन गया, पाया दुख भारी ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

जरन खुदी रघुनाथके, मन नाहिं सुहाती ।
जाके जिय अभिमान है, ताकी तोरत छाती ॥ २ ॥
एक दया और दीनता, ले रहिये भाई ।
चरन गहौ जाय साधके, रीझै रघुराई ॥ ३ ॥
यही बड़ा उपदेस है, पर द्रोह न करिये ।
कह मलूक हरि सुमिरिके, भौसागर तरिये ॥ ४ ॥

(१७४)

ना वह रीझै जप तप कीन्हे, ना आतमका जारे ।
ना वह रीझै धोती टाँगे, ना कायाके पखाँरे ॥
दाया करै धरम मन राखै, घरमें रहे उदासी ।
अपना-सा दुख सबका जानै, ताहि मिलै अविनासी॥
सहै कुसब्द बादहूँ त्यागै, छाँड़े गरब गुमाना ।
यही रीझ मेरे निरंकारकी, कहत मलूक दिवाना ॥

(१७५)

राम कहो राम कहो, राम कहो बावरे ।
अवसर न चूक भोंदू, पायो भलो दाँव रे ॥ १ ॥
जिन तोकों तन दीन्हों, ताकौ न भजन कीन्हो ।
जनम सिरानो जात, लोहे कैसो ताव रे ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

c Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

रामजीको गाय, गाय रामजीको रिझाव रे।
रामजीके चरन-कमल, चित्तमाहिं लाव रे ॥ ३ ॥
कहत मलूकदास, छोड़ दे तैं झूठी आस।
आँनद मगन होइके, हरिगुन गाव रे ॥ ४ ॥

(१७६)

दीनबन्धु दीनानाथ, मेरी तन हेरिये ॥टेक॥
भाई नाहिं, बन्धु नाहिं, कुटुम-परिवार नाहिं,
ऐसा कोई मित्र नाहिं, जाके ढिंग जाइये ॥ १ ॥
सोनेकी सलैया नाहिं, रूपेका रूपैया नाहिं,
कौड़ी-पैसा गाँठ नाहिं जासे कछु लीजिये ॥ २ ॥
खेती नाहिं, बारी नाहिं, बनिज-ब्योपार नाहिं,
ऐसा कोई साहु नाहिं, जासों कछू माँगिये ॥ ३ ॥
कहत मलूकदास, छोड़ि दे पराई आस,
रामधनी पाइकै अब काकी सरन जाइये ॥ ४ ॥

चरनदास

(१७७) सोठना

सुन सुरत रँगीली हो कि हरि-सा यार करौ ॥टेक॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

जब छूटै बिखन बिकार कि भौ जल तुरत तरौ ॥ १ ॥
तुम त्रैगुन छैल बिसारि गगनमें ध्यान धरौ ॥ २ ॥
रस अमरित पीवो हो कि बिखया सकल हरौ ॥ ३ ॥
करि सील-संतोष सिंगार छिमाको माँग भरौ ॥ ४ ॥
अब पाँचों तजि लगवार अमर वर पुरुष बरौ ॥ ५ ॥
कहैं चरनदास गुरु देखि पियाके पाँव परौ ॥ ६ ॥

(१७८)

टुक रंगमहलमें आव कि निरगुन सेज बिछी ।
जहँ पवन गवन नहिं होय जहाँ जा सुरति बसी ॥ १ ॥
जहँ त्रैगुन बिन निरबान जहाँ नहिं सूर-ससी ।
जहँ हिल-मिलकै सुख मान मुकतिको होय हँसी ॥ २ ॥
जहँ पिय-प्यारी मिलि एक कि आसा दुईनसी ।
जहँ चरनदास गलतान कि सोभा अधिक लसी ॥ ३ ॥

(१७९)

टुक निरगुन छैला सूँ, कि नेह लगाव री ।
जाकौ अजर अमर है देश, महल बेगमपुर री ॥ १ ॥
जहँ सदा सुहागिनि होय, पियासूँ मिलि रहु री ।
जहँ आवागमन न होय, मुकति चेरी तेरी ॥२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

कहैं चरनदास गुरु मिले, सोई ह्याँ रहु बौरी ।
तब सुख सागरके बीच, कलहरी है रहु री ॥ ३ ॥

(१८०) हिँडोला हेली

तरसैं मेरे नैंन हेली, राम मिलन कब होयगो ॥टेक॥
पिय दरसन बिन क्यों जिऊँ री हेली कैसे पाऊँ चैन ।
तीर्थ बर्त बहुतै किये री चित दै सुने पुरान ॥१॥
बाट निहारत ही रहूँ री हेली, सुधि नहिं लीनी आय ।
यह जोबन यों ही चलौ री चालौ जनम सिराय ॥२॥
बिरहा दल साजे रहे री हेली, छिन-छिनमें दुख देहि ।
मन लालनके बस परौ, भई भाक-सी देहि ॥३॥
गुरु सुकदेव कृपा करौ जी हेली, दीजै बिरह छुटाय ।
चरनदास पियसू मिले सरन तुम्हारी धाय ॥४॥

(१८१)

मो बिरहिनकी बात हेली, बिरहिन होइ जानिहै ।
नैन बिछोहा जानती री हेली, बिरहै कीन्हों घात ॥टेक॥
या तनकूँ बिरहा लगो री हेली, ज्यों घुन लागो काठ ।
निसदिन खाये जातु है, देखूँ हरिकी बाट ॥
हिरदेमें पावक जरै री हेली, तपि नैना भय लाल ।
आसूँपर आसूँ गिरै, यही हमारो हाल ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

प्रीतम बिन कल ना परै री हेली, कलकल सब अकुलाहिं।
डिगी परूँ, सत ना रहौ कब पिय पकरैं बाँहिं॥
गुरु सुकदेव दया करैं री हेली, मोहि मिलावैं लाल।
चरनदास दुख सब भजैं, सदा रहूँ पति नाल॥

(१८२) होली

प्रेमनगरके माहिं होरी होय रही।
जब सों खेली हमहूँ चित दैं, आपनहूँ को खोय रही॥
बहुतन कुळ अरु लाज गँवाई, रहौ न कोई काम।
नाचि उठैं, कभी गावन लागैं, भूले तन-धन-धाम॥
बहुतनकी मति रंग रँगी है, जिनकौ लागौ प्रेम।
बहुतनकों अपनी सुधि नाहीं कौन करै अस नेम॥
बहुतनका गदगद ही बानी, नैनन नीर ढराय।
बहुतनको बौरापन लागो हाँकी कही न जाय॥
प्रेमीकी गति प्रेमी जानै, जाके लागी होय।
चरनदास उस नेहनगरकी, सुकदेवा कहि सोय॥

(१८३) मंगल

समझ रस कोइक पावै हो।
गुरु बिन तपन बुझै नहीं, प्यासा नर जावै हो॥ १॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

वहुत मनुष ढूँढ़त फिरैं अंधरे गुरु सेवैं हो ।
उनहूँकों सूझै नहीं, औरनकों देवैं हो ॥ २ ॥
अँधरेकों अँधरा मिलै नारीकों नारी हो ।
ह्वाँ फल कैसे होयगा, समझैं न अनारी हो ॥ ३ ॥
गुरु सिष दोऊ एक से एकै व्यवहारा हो ।
गयो भरोसे डूबिकै वै, नरक मँझारा हो ॥ ४ ॥
सुकदेव कहैं चरनदाससूँ, इनका मत कूरा हो ।
ग्यान मुकति जब पाइये, मिलै सतगुरु पूरा हो ॥ ५ ॥

(१८४) सोरठ

वह पुरुषोत्तम मेरा प्यार ।
नेह लगी टूटै नहिं तार ॥ १ ॥
तीरथ जाऊँ न व्रत करूँ ।
चरनकमलको ध्यान धरूँ ॥ २ ॥
प्रानपियारे मेरेहि पास ।
वन-वन माहिं न फिरूँ उदास ॥ ३ ॥
पढ़ूँ न गीता-वेद-पुरान ।
एकहिं सुमिरूँ श्रीभगवान ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

औरनकों नहि नाऊँ सीस।
हरि ही हरि हैं बिस्वे बीस ॥ ५ ॥
काहूकी नहिं राखूँ आस।
तृस्ना काटि दई है फाँस ॥ ६ ॥
उद्यम करूँ न राखूँ दाम।
सहजहिं है रहैं पूरन काम ॥ ७ ॥
सिद्धि मुकति फल चाहौं नाहिं।
नित ही रहूँ हरि संतन माहिं ॥ ८ ॥
गुरु सुकदेव यही मोहिं दीन।
चरनदास आनँद लवलीन ॥ ९ ॥

(१८५) हिंडोला

झूलत कोइ कोइ संत लगन हिंडोलने ॥टेक॥
पौन उमाह उछाह धरती सोच सावन मास।
लाजके जहँ उड़त बगुले मोर हैं जग हाँस ॥ १ ॥
हरष-सोक दोउ खंभ रोपे सूरत डोरी लाय।
बिरह पटरी बैठि सजनी उमँग आवै जाय ॥ २ ॥
सकल बिकल तहँ देत झोके बिपत गावनहार।
सखी बहुतक रंग राती रँगी पाँचौं नार ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

नैन बादल उमँगि बरसै दामिनी दमकात ।
बुद्धिकौ ठहराव नाहीं, नेह की नहिं जात ॥ ४ ॥
सुकदेव कहैं, कोइ बली झूले, सीस देत अकोर ।
चरनदास भये बौरे जाति-बरन-कुल छोर ॥ ५ ॥

(१८६) विहाग

साधो निंदक मित्र हमारा ।
निंदककों निकटे ही राखो, होन न देउँ नियारा ॥
पाछे निंदा करि अघ धोवै, सुनि मन मिटै बिकारा ।
जैसे सोना तापि अग्निमें, निरमल करै सोनारा ॥
घन अहरन कसि हीरा निबटै, कीमत लच्छ हजारा ।
ऐसे जाँचत दुष्ट संतकूँ, करन जगत उँजियारा ॥
जोग-जग्य-जप पाप कटन हितु करै सकल संसारा ।
बिन करनी मम करम कठिन सब, मेटै निंदक प्यारा ॥
सुखी रहो निंदक जग माहीं रोग न हो तन सारा ।
हमरी निंदा करनेवाला, उतरै भवनिधि पारा ॥
निंदकके चरनोंकी अस्तुति, भाखौं बारंबारा ।
चरनदास कहैं सुनियो साधो, निंदक साधक भारा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

(१८७) परज

जिन्हैं हरिभगति पियारी हो ।
मात-पिता सहजै छुटैं, छुटैं सुत अरु नारी हो ॥ १ ॥
लोकभोग फीके लगैं, सम अस्तुति गारी हो ।
हानि-लाभ नहिं चाहिये, सब आसा हारी हो ॥ २ ॥
जगसूँ मुख मोरे रहैं, करैं ध्यान मुरारी हो ।
जित मनुवाँ लागो रहै, भइ घट उँजियारी हो ॥ ३ ॥
गुरु सुकदेव बताइया, प्रेमी गति भारी हो ।
चरनदास चारौं वेदसूँ, औरै कछु न्यारी हो ॥ ४ ॥

(१८८)

गुरु हमरे प्रेम पियायौ हो ।
ता दिन तें पलटौ भयौ, कुल गोत नसायौ हो ॥ १ ॥
अलम चढ़ौ गगनै लगौ, अनहद मन छायौ हो ।
तेजपुंजकी सेजपै, प्रीतम गल लायौ हो ॥ २ ॥
गये दिवाने देसड़े, आनँद दरसायौ हो ।
सब किरिया सहजै छुटी तप नेम भुलायौ हो ॥ ३ ॥
त्रैगुनतें ऊपर रहूँ, सुकदेव बसायौ हो ।
चरनदास दिन रैन, नहिं तुरिया-पद पायौ हो ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

(१८९) सोरठ

अब घर पाया हो मोहन प्यारा ॥टेक॥
लखो अचानक अज अबिनासी, उघरि गये दृगतारा॥ १ ॥
झूमि रह्यौ मेरे आँगनमें, टरत नहीं कहुँ टारा ॥ २ ॥
रोम-रोम हिय माहीं देखो, होत नहीं छिन न्यारा ॥ ३ ॥
भयो अचरज चरनदास न पैये खोज किये बहु बारा॥ ४ ॥

(१९०) काफी

कोइ दिन जीवै तौ कर गुजरान ।
कहर गरूरी छाँड़ि दिवाने, तजौ अकसकी बान ॥
चुगली-चोरी अरु निंदा लै, झूठ कपट अरु कान ।
इनकूँ डारि गहै जत सत कूँ सोई अधिक सयान ॥
हरि हरि सुमिरौ, छिन नहिं बिसरौ, गुरुसेवा मन ठानि ।
साधुनकी संगति कर निस-दिन, आवै ना कछु हानि ॥
मुड़ौ कुमारग, चलौ सुमारग, पावौ निज पुर बास ।
गुरु सुकदेव चेतावैं तोकूँ, समुझ चरन हीं दास ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

गुरु नानक

(१९१)

राम सुमिर, राम सुमिर, एही तेरो काज है ॥टेक॥
मायाकौ संग त्याग, हरिजूकी सरन लाग ।
जगत सुख मान मिथ्या, झूठौ सब साज है ॥ १ ॥
सुपने ज्यों धन पिछान, काहेपर करत मान ।
बारूकी भीत तैसें, बसुधाकौ राज है ॥ २ ॥
नानक जन कहत बात, बिनसि जैहै तेरो गात ।
छिन छिन करि गयौ काल्ह तैसे जात आज है ॥ ३ ॥

(१९२)

सब कछु जीवतकौ ब्यौहार ।
मातु-पिता, भाई-सुत, बांधव, अरु पुनि गृहकी नारि ॥
तनतें प्रान होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार ।
आध घरी कोऊ नहिं राखै, घरतें देत निकार ॥
मृग तृस्ना ज्यों जग रचना यह देखौ हृदै बिचार ।
कह नानक, भजु रामनाम नित, जातें होत उधार ॥

(१९३)

हौं कुरबाने जाउँ पियारे, हौं कुरबाने जाउँ ॥टेक॥
हौं कुरबाने जाउँ तिन्हाँ दे, लैन जो तेरा नाउँ ।
लैन जो तेरा नाउँ तिन्हाँ दे, हौं सद कुरबाने जाउँ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

काया रँगन जे थिये प्यारे, पाइये नाउँ मजीठ ।
रंगनवाला जे रँगे साहिब, ऐसा रंग न डीठ ॥ २ ॥
जिनके चोलड़े रत्तड़े प्यारे कत तिन्हाँ दे पास ।
धूड़ तिन्हाँ कोजे मिले जीको, नानकदी अरदास ॥ ३ ॥

(१९४)

मुरसिद मेरा मरहमी, जिन मरम बताया ।
दिल अंदर दीदार है, खोजा तिन पाया ॥ १ ॥
तसबी एक अजूब है, जामें हरदम दाना ।
कुंज किनारे बैठिके, फेरा तिन्ह जाना ॥ २ ॥
क्या बकरी क्या गाय है, क्या अपनो जाया ।
सबको लोहू एक है, साहिब फरमाया ॥ ३ ॥
पीर पैगम्बर औलिया, सब मरने आया ।
नाहक जीव न मारिये, पोषनको काया ॥ ४ ॥
हिरिस हिये हैवान है, बस करिलै भाई ।
दाद इलाही नानका, जिसे देवै खुदाई ॥ ५ ॥

(१९५)

काहे रे बन खोजन जाई ।
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संग समाई ॥ १ ॥
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है, मुकर माहि जस छाई ।
तैसे ही हरि बसै निरंतर, घट ही खोजौ भाई ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding I

बाहर भीतर एकै जानों. यह गुरु ग्यान बताई ।
जन नानक बिन आपा चीन्हे, मिटै न भ्रमकी काई ॥ ३॥

(१९६)

प्रभु मेरे प्रीतम प्रान पियारे ।
प्रेम भगति निज नाम दीजिये, द्याल अनुग्रह धारे ॥
सुमिरौं चरन तिहारे प्रीतम, हृदै तिहारी आसा ।
संत जनोंपै करौं बेनती. मन दरसनकौ प्यासा ॥
बिछुरत मरन, जीवन हरि मिलते, जनको दरसन दीजै ।
नाम अधार, जीवन-धन नानक प्रभु मेरे किरपा कीजै ॥

(१९७)

अब मैं कौन उपाय करूँ ।
जेहि बिधि मनको संसय छूटै, भव-निधि पार करूँ ।
जनम पाय कछु भलौ न कीन्हों, तातें अधिक डरूँ ॥
गुरुमत सुन कछु ग्यान न उपजौ, पशुवत उदर भरूँ ।
कह नानक, प्रभु बिरद पिछानौ. तवहौं पतित तरूँ ॥

(१९८)

या जग मीत न देख्यो कोई ।
सकल जगत अपने सुख लाग्यो. दुखमें संग न होई ॥
दारा-मीत, पूत संबंधी सगरे धनसों लागे ।
जबहीं निरधन देख्यौ नरकों संग छाड़ि सब भागे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

कहा कहूँ या मन बौरेकौं, इनसों नेह लगाया।
दीनानाथ सकल भय भंजन, जस ताको बिसराया ॥
स्वाँन-पूँछ ज्यों भयो न सूधो, बहुत जतन मैं कीन्हौ।
नानक लाज बिरदकी राखौ नाम तिहारो लीन्हौ ॥

(१९९)

जो नर दुखमें दुख नहिं मानै।
सुख-सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै ॥
नहिं निंदा, नहिं अस्तुति जाके, लोभ-मोह अभिमाना।
हरष सोकतें रहै नियारो, नाहिं मान-अपमाना ॥
आसा-मनसा सकल त्यागिकै, जगतें रहै निरासा।
काम-क्रोध जेहि परसै नाहिन, तेहि घट ब्रह्म निवासा ॥
गुरु किरपा जेहिं नरपै कीन्ही, तिन्ह यह जुगति पिछानी।
नानक लीन भयो गोबिंदसों, ज्यों पानी सँग पानी ॥

(२००)

यह मन नेक न कह्यौ करै।
सीख सिखाय रह्यौ अपनी सी, दुरमतितें न टरै ॥
मद-माया-बस भयौ बावरौ, हरिजस नहिं उचरै।
करि परपंच जगतके डहकै अपनौ उदर भरै ॥
स्वान-पूँछ ज्यों होय न सूधौ कह्यो न कान धरै।
कह नानक, भजु राम नाम नित, जातें काज सरै ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

main. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding

अप
मेरो
अंतकाल संगी नहिं कोऊ,
मन मूरख अजहूँ नहिं समुझत,
नानक भव-जल-पार परै जो

दरिया सा

(२०२)

जाके उर उपजी नहिं भाई।
सो क्या जाने
ब्यावर जाने पीरकी सार।
बाँझ नार क्या ल
पतिब्रता पतिकौ ब्रत जानै।
बिभिचारिन मिल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IK

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh